जपमाला

अनन्त श्री विभूषित

प.पू. सद्‌गुरु श्री गङ्गेश्वरानन्दजी महाराज

उदासीन

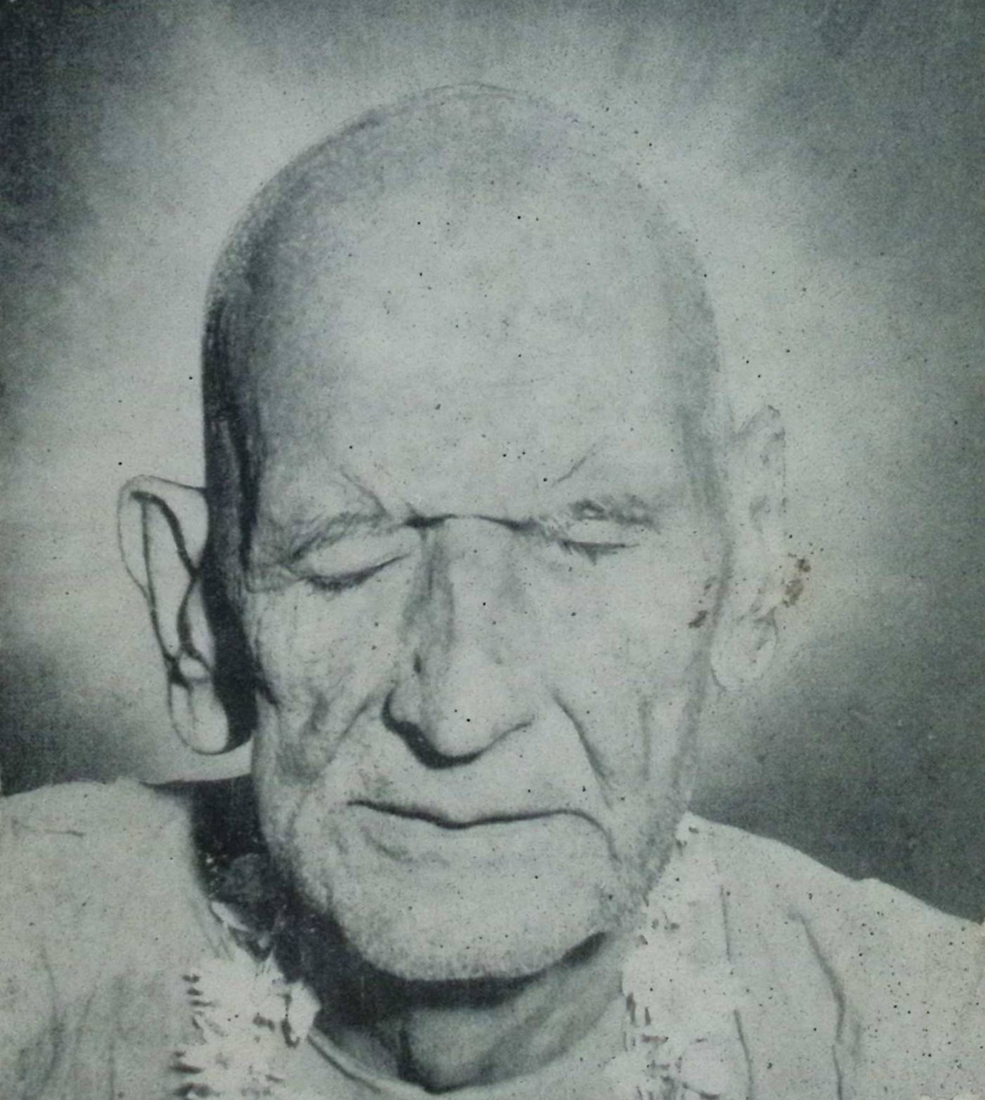

শ্রী বীর রাঘব পাল কে

স্নেহ সহ -

স্বামী আত্মস্থানন্দ

22/6/95

जपमाला

(जीवन में नित्य उपयोगी वेदमन्त्रों की माला)

संकलन

अनन्तश्रीविभूषित वेददर्शनाचार्य महामंडलेश्वर

सद्गुरु श्री गंगेश्वरानन्दजी महाराज

उदासीन

श्री शंकराचार्य संस्कृत महाविद्यालय भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली

28-1-98

सुशोभन

श्रीमती रतन फोजदार

अनुवाद

अंग्रेजी — प्रा. श्रीमती लतादेवी, एम. ए.

हिन्दी — डॉ. राजेन्द्र नाणावटी, एम. ए., पीएच. डी.

संपादन

श्रीमती नीलम पटेल, एम. ए., एम. फिल. और डॉ. गौतम पटेल, एम. ए., पीएच. डी.

Bharatiya Vidya Bhawan's Sri Sankaracharya Sanskrit Mahavidyalaya

488

प्रकाशक :
श्रीमती रतनबहन एच. फोजदार
१५, लीली कोर्ट
बम्बई ४०००२०

संशोधन–सहायक
प्रा. सुमन अजमेरी
आचार्य नटवरलाल याज्ञिक

© **श्रीमती रतनबहन एच. फोजदार**

प्रथम आवृत्ति ५०००

१०० वीं गुरु जयन्ती
पौष शुक्ला सप्तमी २०३७
जनवरी १९८१

Sankarachar
488

मूल्य : रु. ७–००

मुद्रण–व्यवस्था
श्री रश्मिकान्त जे. शाह

मुद्रक :
श्री सुरेन्द्र जे. शाह
पारिजात प्रिण्टरी, २८८/१, राणिप,
अहमदाबाद–५

परमपूज्य सद्गुरुदेव : जीवन-परिमल

विश्व विख्यात उदासीन सन्त शिरोमणि सद्गुरु स्वामी श्री गंगेश्वरानन्दजी महाराज की यह संक्षिप्त जीवन-रेखा, उनके शताब्दी महोत्सव के अति मंगल एवं पावन अवसर पर, प्रेमी जनता के हाथ में, नन्दनवन के दिव्य पारिजात पुष्प परिमल के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। उनके जीवन-चरित के प्रथम तथा द्वितीय खण्ड **'योगेश्वर गुरुगंगेश्वर'** पहले प्रकाशित हो चुके हैं। शताब्दी के बाद, उनका संपूर्ण विवरण के साथ तृतीय खण्ड आगामी गुरु-पूर्णिमा तक प्रकाशित हो जाने की आशा है।

भारत के अति प्राचीन वैदिक सम्प्रदायों में उदासीन सम्प्रदाय एक है। सर्वप्रथम परमहंस रूपधारी भगवान् विष्णु ने इस सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया एवं इसके सिद्धान्तों का उपदेश ब्रह्माजी के पुत्र श्री सनत्कुमार को दिया। सनत्कुमारजी ने देवर्षी नारदजी को और नारदजी ने अपने शिष्यों को बताया। इसी शिष्य-परंपरा में साक्षात् शिवावतार आचार्य श्री श्रीचन्द्र भगवान् आते हैं। आप श्री सनत्कुमारजी से, सोलहवी शताब्दी में, २६५ वी पीढ़ी में आते हैं। इसी शिष्य-परम्परा में २६ वें स्थान में दादागुरु स्वामी श्री रामानन्दजी महराज एवं २७ वें स्थान में आप उनके प्रिय शिष्य विराजमान हैं।

स्वामी रामानन्दजी महराज के एक अनन्य प्रेमी भक्त पंजाब निवासी पण्डित रामदत्तजी थे। उनकी पत्नी सरलादेवी ने सन् १८८१ २७ दिसम्बर, संवत् १९३८ पौष शुक्ला सप्तमी को, एक पुत्ररत्न प्रसूत किया, जिसका नाम 'चन्द्रेश्वर' रखा गया। बालक इतना गौरवर्ण और तेजयुक्त था कि उनको देखते सब चकित थे। उनकी नानी के शब्दों में तो 'चाँद का एक टुकड़ा ही पृथ्वी पर उतर आया था।' उनमें दिव्य गुण रत्नों की झलक थी। पाँच वर्ष की अति कोमल अवस्था में ही उनको भगवान् श्री कृष्ण के दर्शन हुए। तत्पश्चात् थोड़े ही दिनों में, चेचक के प्रकोप से आपकी दृष्टि सर्वथा नष्ट हो गई। भगवान् के साक्षात्कार करने के बाद, भौतिक जगत की विलासीता को क्या देखना! चन्द्रेश्वर छिपे ज्ञान-चक्षु से संपन्न तो थे ही, उन्होंने इस घटना को भी प्रभु का वरदान ही माना।

एक दिन विचरते हुए स्वामी श्री रामानन्दजी महाराज अपने प्रेमी भक्त के घर पधारे, तब इस सात वर्षीय बालक ने भी प्रणाम किया। स्वामीजी नेत् चन्द्रेश्वर को एक होनहार विभूति के रूप में देखा, एवं उनको भगवद्गीता और विष्णुसहस्रनाम का पाठ करने का आदेश दिया। तदनुसार, चन्द्रेश्वर बड़ी लगन से प्रतिदिन २०-२२ घण्टों नाम-जप एवं पाठ करने में व्यतीत करने लगा। सतत कठोर तपस्या के फल स्वरूप उनको आत्मसाक्षात्कार हो गया। चन्द्र-किरणों से उद्भासित सागर जैसे तरँगित हो उठता है, ज्ञान-रवि के उदित होनेपर, चन्द्रेश्वर का पुनित हृदयसागर भी उल्लसित हो उठा। अनेक चमत्कारपूर्ण विचार-धारा स्फुरित होने लगी।

फिर भी लोकसंग्रहार्थ, गुरुदेव की आज्ञा से, पञ्चदेव-उपासना, गायत्री पुरश्चरण और योग साधन में ग्यारह वर्ष की वय तक आप लगे रहे। सन् १९०५, संवत् १९६२ में, केवल चौबीस वर्ष की युवावस्था में, स्वामी रामानन्दजी ने चन्द्रेश्वर को, हरिद्वार में, गंगा के पावन तट पर, उदासीन सम्प्रदाय की दीक्षा दी एवं तब से उनका नाम 'गंगेश्वरानन्द उदासीन' रखा गया।

यद्यपि आपको वेद-शास्त्रादि का ज्ञान सम्पादन करने की कोई आवश्यकता नहीं थी, आप संपूर्ण भाव-सम्पन्न थे ही, फिर भी पुनः लोकसंग्रहार्थ, दीक्षा के पश्चात्, स्वामी रामानन्दजी की आज्ञानुसार, अध्ययन के लिये आप बनारस गये। सामान्य छात्रों को षड्-शास्त्रों का पूर्ण अभ्यास करने में प्रायः बारह वर्ष लग जाते हैं, परन्तु आप केवल तीन वर्षों में ही सब विद्या सम्पादन कर लौट आये।

अब आपको शेष कुछ करना नहीं था। अतः स्वामीजी के आदेश से आपने साधुमण्डली एकत्रित कर, भारत में तीर्थयात्रा प्रारम्भ की। आधुनिक शिक्षा-प्राप्त युवक वर्ग जब हास-विलास तथा मौज-शौक में अपना जीवन बिताना सार्थक समझते हैं, वहाँ तपोमूर्ति यह युवक, यौवन को सहर्ष ठुकराता हुआ, प्रौढावस्था प्राप्त, जनता-जनार्दन की सेवा में अपना समग्र जीवन समर्पित करने में साफल्य समझता है।

भारत में तीर्थयात्रा दरम्यान आपने अनेक लोकसेवा के कार्य किये। सनातन धर्म तथा आर्यसंस्कृति के प्रखर प्रवर्तक एवं अनन्य प्रेमी होने पर, आपने उत्तर भारत में अनेक शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना की। सन् १९२२ में, अमृतसर में दुर्ग्याना स्थान के प्रसिद्ध लक्ष्मी नारायण मन्दिर का निर्माण किया।

सन् १९८० में वर्षों से सूखे पड़े वहाँ के तालाब को पुनः जलपूरित करने के लिये, छोटी-सी नहर बनवा देने का श्रेय आपको ही है। वर्षों तक, कुम्भमेले के अवसर पर, अति विस्तृत छावनी लगा कर, आप आगन्तुक संत-महात्मा, विद्वानों-गृहस्थों का निवास-स्थान तथा खानपान की सुन्दर व्यवस्था एवं योग्य सत्कार करके सबको सन्तुष्ट करते रहे हैं।

आपका कार्यक्षेत्र इतना विशाल है कि धन-राशि अत्यावश्यक होने पर भी आप किसी से चन्दा या दान नहीं लेते। परन्तु आपके प्रेमी भक्तगण, आपके विभिन्न लक्ष्य-सिद्धि अर्थ, सहर्ष अपेक्षित धन-सामग्री एकत्रित कर देते हैं। स्वयं परम ज्ञानी, सब रिद्धि-सिद्धि युक्त होने पर भी, आप सदा विनम्र, विरक्त एवं प्राणिमात्र के हित-चिन्तक रहे हैं।

विद्या-विनययुक्त, आपकी आदर्श, उत्कर्षशील दृष्टि ने, गरीब विद्यार्थिओं की शिक्षा-प्राप्ति के लिये, अनेक पाठशाला स्थापित की हैं। उनके संचालनार्थ अनेक संस्थाओं की स्थापना की है, जिसमें बारह से अधिक ट्रस्ट कार्यरत हैं। इतना ही नहीं, और भी असंख्य निःसहाय विद्यार्थियों को आपने गुप्तरूप में सहायक बनकर उनके जीवन को नवपल्लवित किया है। इसके अतिरिक्त, आपकी राष्ट्र सेवा भी अद्‌भुत है। सर्वथा निवृत्ति-प्रधान होने पर भी, आपका जीवन पूर्णतया प्रवृत्तिमय बना रहता है, यह भी आपकी विलक्षणता है। आप अनेक सद्‌गुण-रत्नों की पूर्ण-प्रभा से प्रकाशित हैं। आपकी अखूट देशभक्ति, अद्वितीय ज्ञान, लोकोत्तर प्रज्ञा, स्मृति-शक्ति तथा विश्व-प्रेम के कारण, महात्मा गाँधी, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गाँधी, श्री लालबहादुर शास्त्री आदि अनेक सर्वोच्च राज्यपदाधिकारियों के भी आप श्रद्धा एवं आदर के पात्र हैं।

भारत विभाजन के पश्चात्, शरणार्थियों के पुनर्वास का प्रश्न सुलझाने के लिये विविध प्रकार की सहायता, भारत-पाकिस्तान के युद्ध दरम्यान मोर्चे पर खड़े सैनिकों की सक्रिय आर्थिक-नैतिक सहायता, हिन्दू तथा सिक्खों में मैत्री-भाव-स्थापन का कौशल्य, चीन-पाकिस्तान के युद्धों में अपने राष्ट्र को आर्थिक-दान आदि ऐसे अनेक शुभ कार्यों से आपका समग्र जीवन-पटल प्रकाशित है।

सन् १९६७ में आपने महर्षि वेदव्यास द्वारा विभाजित चारों वेदों का एक संकलित महाग्रन्थ प्रकाशित करने का निश्चय किया। अनेक वेद-विद्वानों के सहयोग से, लगातार तीन साल के बाद, सन् १९७१ में यह विशद्

'भगवान् वेद' नाम का ग्रन्थ प्रकाशित किया। भारत की लुप्तप्राय वेद-विद्या का पुनरुद्धार अथाग उद्यम एवं परिश्रम द्वारा करके, आपने विश्व में वैदिक संस्कृति की आनन्द-लहरी फैला दी।

सन् १९७१ से लेकर १९७३ तक, आपने भारत के कोने-कोने में वेद-स्थापना की। पश्चात् सन् १९७४ में दक्षिण-पूर्व एशिया की पौने दो मास की यात्रा की। पुनः सन् १९७५ में ता. १२ अप्रैल से ता. ३१ जुलाई तक आफ्रिका, इंग्लेण्ड, अमरिका एवं वेस्ट इंडिझ में स्थानीय पुस्तकालयों में विश्वविद्यायलयों में, मन्दिरों में एवं अनेक ग्रहस्थों के ग्रहों में आपने 'भगवान् वेद' ग्रन्थ की स्थापना की। इतनी वृद्धावस्था एवं अशक्त होने पर भी, आपने सतत् उत्साह-उल्लास के साथ जो भगीरथ कार्य किया वह सचमुच अत्यंत श्लाघनीय है। विदेश के लोग भी इस महा-ग्रन्थ एवं आपके पावन दर्शन पाकर, अति प्रसन्न एवं चकित थे।

वेद-सागर से ज्ञान की गागरें भर भर, विश्व के त्रिविध ताप सन्तप्त तृषातुर जीवों को स्वयं अपने वरद कर-कमल से सुधा-पान कराकर तृप्त एवं सन्तुष्ट किये। मुरझाया हुआ विश्व-वृक्ष, मानों इस वेदामृत संजीवनो से नवजीवन प्राप्त कर, नवपल्लवित, पुष्पित हो उठा है, बसन्त की बहार छा गई है, अब द्विजरूप भ्रमर मस्त बन गुञ्जारव कर रहे हैं। कोकिल की रम्य कुहूक से विश्व-वाटिका अवर्णनीय सौन्दर्य-माधुर्य की घटा से शोभायमान हो उठी है।

आप निःसन्देह 'माया मनुष्यं हरिम्' हैं। अन्त में आपको शत शत कोटी प्रणाम करते हुए, यही विनय करते हैं कि सनातन धर्म एवं आर्य संस्कृति के सूर्यरूप आप नित्य प्रकाशित रहें एवं आपकी विश्व विजय पताका, 'यावत् चन्द्रदिवाकरौ' लहराती हुई 'गुरुगंगेश्वर' की गुण-गरिमा गाती रहे, यही अभ्यर्थना है।

—रतन फोजदार

卐

अनुक्रम

१. विभूतियोग (मंत्र १ से ११) 1–14

१. अग्निस्तुति–3 २. सरस्वती का आवाहन–4 ३. चित्तप्रकाश–5 ४. प्रकाश की कामना–6 ५. सूर्य के तीन चरण–7 ६. जीव और शिव–8 ७. एक ही अनेक है–9 ८. विश्वव्यापक–10 ९. भद्र और सुन्दर–12 १०. अजर–13 ११. बहुरूपिया–14

२. कर्मयोग (मंत्र १२ से ८०) 15–55

१२. देव-आशिष–17 १३. कल्याणकामना–18 १४. कल्याण-कामना–19 १५. भद्रयाचना–20 १६. शतायुकामना–22 १७. ऋत से माधुरी–23 १८. दे सुभग दिन–26 १९. कल्याणपथ–27 २०. अमृत-याचना–28 २१. वीरवाणी–29 २२. अमरता की याचना–30 २३. कल्याण रस–32 २४. अकेले न खायें–33 २५. जीवनकामना–34 २६. ऐक्य की कामना–35 २७. यज्ञ से कल्याण–38 २८. यह सब दो मुझे–40 २९. सामाजिक संवाद-41 ३०. राष्ट्रकल्याण–42 ३१. पवित्र मन–44 ३२. शिवसंकल्प मन–45 ३३. पूर्णता–46 ३४. शान्ति–48 ३५. निष्काम कर्मयोग–49 ३६. वरप्राप्ति–51 ३७. चित्त को आकर्षण करें–52 ३८. आचार-परंपरा–53 ३९. स्वास्थ्यकामना–54 ४०. शुभ गुणों की कामना–55

३. भक्तियोग (मन्त्र ४१–६२) 57–80

४१. कल्याणकर पिता–59 ४२. मन्त्रप्रेम–60 ४३. विष्णु का परम धाम–61 ४४. भद्र विचार–62 ४५. माँ का स्तन–63 ४६. सदा जाग्रत रहो–64 ४७. मीनपियासी–65 ४८. देवकृपा से विजय–66 ४९. देव की कृपा–67 ५०. पवित्रता की कामना–68 ५१. ऋषि का शब्द–69 ५२. परम तत्त्व की जिज्ञासा–70 ५३. आदि देव कौन ?–71 ५४. दीर्घायुष-याचना–72 ५५. इन्द्र की पुजा–73 ५६. यज्ञ से कामना की प्राप्ति–74 ५७. प्रियता की कामना–75 ५८. ऋत की रक्षक अदिति–76 ५९. प्रियत्व की कामना–77 ६०. वेदस्तुति–78 ६१. वेदगीत–79 ६२. अग्निदेव–80

४. ज्ञानयोग (मन्त्र ६३ से ७४) 81–94

६३. वेद का अर्थज्ञान–83 ६४. गणपति की स्तुति–84 ६५. गायत्रीमंत्र–प्रकाश की कामना–85 ६६. सन्मार्ग बुद्धि–86 ६७. मित्रता का द्रोह–87 ६८. किसको हविष् अर्पण करें ?–88 ६९. ऋषि की ब्रह्मवाणी–89 ७०. व्रत से सत्य तक–90 ७१. मेधाकामना–91 ७२. गृहसंवाद–92 ७३. जीवन के लिये प्रार्थना–93 ७४. ब्रह्मचर्य–94

५. ज्ञानयोग (मन्त्र ७५ से ९०) 95–112

७५. देव का काव्य–97 ७६. वाणी के चार चरण–98 ७७. सूर्य–देवों का नेत्र–99 ७८. एक को विप्रों ने अनेक कहा–100 ७९. एक ही अनेक–101 ८०. वाणी का अर्थदर्शन–102 ८१. मित्रों के प्रकार–103 ८२. विश्वपुरुष–104 ८३. ऋषि की वाणी–प्रकृति–105 ८४. सृष्टि का धारक–106 ८५. परम पुरुष–मृत्यु के पार–107 ८६. ब्रह्म ही सब देव–108 ८७. विश्व का नीड–109 ८८. विश्व से एक रूप–विश्व में व्याप्त–110 ८९. परम देव–111 ९०. परम देव के ज्ञान से अमरत्व–112

६. जीवनयोग (मन्त्र ९१ से १०८) 113–132

९१. वरुण से कुछ छिपा नहीं–115 ९२. ऋत का बल–116 ९३. देव–परिश्रमी के सखा–117 ९४. विश्वरूपदर्शन–118 ९५. सत्यमेव जयते–119 ९६. देवों के प्रिय परिश्रमी–120 ९७. सुखमय जीवन–121 ९८. प्रयत्न करें–122 ९९. वह मित्र क्या ?–123 १००. मित्र की दृष्टि से–124 १०१. शुभप्राप्ति–125 १०२. हे अग्नि ! सन्मार्ग पर ले जाओ !–126 १०३. मैं हूँ वही–127 १०४. मेधा की आराधना–128 १०५. वाणी का स्वरूप–129 १०६. स्थिरता की प्रार्थना–130 १०७. काल का अश्व–131 १०८. सर्वत्र अभय–132 ।

परिशिष्ट

मन्त्र–प्रथम–चरण–सूची–133

गुरु–गिरा–माधुरी–136

卐

स्वर्गीय

श्री भगवानदास कामदार

की

पुण्यस्मृति

ॐ

विभूतियोग

THE PATH OF SPLENDOUR

१. अग्निस्तुति

अग्निं ईळे पुरोहितं
यज्ञस्य देवं ऋत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ॥

ऋ० १–१–१

Praise be to Agni, the foremost-placed,
The priest divine of sacrifice,
The invoker, the supreme source of treasure.

स्तवन करता हूँ अग्नि का,
रत्न के धारक, यज्ञों के
दिव्य पुरोहित, होता, ऋत्विज का ॥

२. सरस्वती का आवाहन

पावका नः सरस्वती
वाजेभिर् वाजिनीवती ।
यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥

ऋ० १–३–१०

May Sarasvati, the purifier,
The giftful one, rich of intellect,
With gifts desire our sacrifice.

पावनी सरस्वती
उपहारिणी उपहार से ।
हमारे यज्ञ की प्रज्ञामती
करती रहे नित कामना ॥

३. चित्तप्रकाश

महो अर्णः सरस्वती
प्र चेतयति केतुना ।
धियो विश्वा वि राजति ॥

ऋ० १–३–१२

With brilliance doth Sarasvati,
Enlighten oceans fathomless,
And brighten all the intellects.

गहरे समन्दर को सरस्वती
प्रकाशित करती है चैतन्यसे ।
आलोकित करती है समस्त चित्तों को ॥

४. प्रकाश की कामना

उद् वयं तमसस्परि
ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यँ
अगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥

ऋ० १–५०–१०

May we rise above darkness,
Higher and higher seeing light,
And may we reach the God among gods,
The Sun, the light most bright.

गहरे तम से ऊपर उठकर
हम निरखें ज्योति प्रकाशमान ।
पा लें वह उत्तम ज्योति सूर्य
देवाधिदेव नभ विद्यमान ॥

५. सूर्य के तीन चरण

यस्य त्री पूर्णा मधुना पदा-
न्यक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति ।
य उ त्रिधातु पृथिवीम् उत द्याम्
एको दाधार भुवनानि विश्वा ॥

ऋ० १-१५४-४

Three steps of His, imperishable,
Filled with mead, rejoice in bliss;
He alone in threefold wise supported
The earth, the heaven and living beings all.

तीन जिसके चरण हैं मधु से भरे,
क्षीण न होते, स्वधा से मदभरे,
तीन रूपों में विश्व को उस एक ने
व्योम, धरती, प्राणी—सब धारण किया ।

६. जीव और शिव

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया
समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।
तयोर् अन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्ति
अनश्नन्नन्योऽभि चाकशीति ॥

ऋ० १–१६४–२०

Two birds, united always, companions,
Cling to the self-same tree.
Of them, one enjoys the fruit of Pippal sweet,
The Other eats not, only witnesseth.

एक डाली का बसेरा, पंखी दो–
साथी हैं उस वृक्ष पर बैठे हुए ।
स्वादु पीपल का है फल एक भोगता,
दूसरा खाता नहीं, बस साक्षी है ॥

७. एक ही अनेक है।

त्वमग्न इन्द्रो वृषभः सतामसि
त्वं विष्णुर् उरुगायो नमस्यः ।
त्वं ब्रह्मा रयिविद् ब्रह्मणस्पते
त्वं विधर्तः सचसे पुरन्ध्या ॥

ऋ० २-१-३

You are, O Agni! Indra,
The lord of existing things,
You are Vishnu of wide stride,
The lord worthy of praise;
You are the lord of brahmans,
You're Brahman, knower of wealth,
You are the lord ordaining
Abundance on us all.

हे अग्नि, तुम हो इन्द्र, सत् के अग्रणी,
तुम विष्णु वन्दनपात्र हो व्यापक गति ।
ब्रह्मणस्पति तुम, ब्रह्म, वसु के ज्ञाता
तुम विधाता, दे रहे संपत विशाल ॥

८. विश्वव्यापक

हंसः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षसद्-
धोता वेदिषद् अतिथिर् दुरोणसद् ।

The swan, He is, seated in the midst of brilliance,
He is the lord of riches, sitting in the aerial regions;
At sacrifice, He is the invoker, at home the guest;

वह हंस निर्मल तेज में लिपटा हुआ,
तेजस्वी है नभ में विचरता देव वह ।
यज्ञ में होता, अतिथि है भवन में,
जन में वही, थल में वही,

विश्वव्यापक

नृषद् वरसद् ऋतसद् व्योमसद्
अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम् ॥

ऋ० ४–४०–५

He is the dweller among men,
The dweller in best places,
The dweller in the Order Divine,
The dweller in infinite skies,
Born of water, of speech, of Law Eternal,
Born of mountains, He is Himself
the Law Divine

सत में वही, नभ में वही,
जल में हुआ उसका सृजन,
वाणी में, ऋत में, पर्वतों में भी सृजन उसका हुआ है,
वह स्वयं ऋत है ॥

९. भद्र और सुन्दर

विश्वानि देव सवितर्
दुरितानि परा सुव ।
यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥

अनागसो अदितये
देवस्य सवितुः सवे ।
विश्वा वामानि धीमहि ॥

ऋ० ५-८२-५; ६

O lord divine ! O Sun !
Drive far from us all harmful things,
What is good, bring that to us.

May we be sinless in the eyes of Aditi;
In the oblation of lord Savita
May we enjoy all beautiful things.

हे देव सविता !
दूर हमसे सब दुरित कर दो, प्रभो !
और जो कल्याण हो, ला दो हमें ॥

देवी अदिति की दृष्टि में निष्पाप हम
उस देव सविताके सवन में हों सदा
सौन्दर्य की केवल करें आराधना ॥

१०. अजर

न यं जरन्ति शरदो न मासा
न द्याव इन्द्रम् अवकर्शयन्ति ।
वृद्धस्य चिद् वर्धताम् अस्य तनूः
स्तोमेभिर् उक्थैश्च शस्यमाना ॥

ऋ० ६–२४–७

Years do not age him, nor months, nor days
Do ever wear Indra out.
He is so grown; yet may his self still grow
Being praised by hymns and songs.

ना बरस, ना मास औ ना दिवस भी
जीर्ण कर सकते कभी हैं इन्द्र को ।
वृद्ध है वह, देह उसकी यह प्रशंसित
गान से–स्तुतियों से नित बढती रहें ॥

११. बहुरूपिया

रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव
तद् अस्य रूपं प्रतिचक्षणाय ।
इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते
युक्ता ह्यस्य हरयः शता दश ॥

ऋ० ६-४७-१८

Of all the various forms, He is the original,
His form it is to be seen everywhere,
Multiform, Indra moves with His divine powers,
Thousand steeds are yoked to His chariot.

है वही प्रतिरूप हर एक रूप का,
दीखता सर्वत्र है वह रूप ही ।
इन्द्र माया से स्वयं ढक कर सदा
विचरता है विश्व में बहुरूपिया,
अश्व उसके रथ में जोते हैं हजार ॥

ॐ

कर्मयोग

THE PATH OF ACTION

१२. देव–आशिष

देवानां भद्रा सुमतिर् ऋजूयतां
देवानां रातिर् अभि नो नि वर्तताम् ।
देवानां सख्यं उप सेदिमा वयं
देवा न आयुः प्र तिरन्तु जीवसे ॥

ऋ० १–८९–२

May the righteous gods bless us
with the warmth of their love,
May the grace of gods lie around us all,
May we obtain their friendship,
May the gods bestow upon us
a long life to live.

निष्कपट देवों की कल्याणी सुमति
हमें प्राप्त हो ।
देवों की कृपा हमारे चहुँदिश हो ।
देवों का सख्य हमें प्राप्त हो ।
देव हमें दीर्घायु प्रदान करें ॥

१३. कल्याणकामना

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं
धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे
रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

ऋ० १–८९–५

That lord, that master of moving
and not-moving,
That inspirer of intellect do we
invoke for protection,
So that He, the nourishing, the protecting,
the guardian, the undeceived lord,
May increase our wealth and weal.

चर–अचर के स्वामी का, उस ईश का
बुद्धिप्रेरक देव का आह्वान हम करते सदा ।
कि वह पोषक, रक्षक, पालक सत का पारखी
देव हम को ऋद्धि दें, कल्याण दें, रक्षा करें ॥

१४. कल्याणकामना

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽरिष्टनेमिः
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

ऋ० १-८९-६

May Indra of wide fame bless us,
May Pushan, the all-knowing, bless us,
May Tarkshya, his wheels' felly unhurt;
And may Brihaspati bestow blessings on us.

बहुकीर्तित इन्द्र हमारा कल्याण करें।
विश्वका ज्ञाता पूषा हमारा कल्याण करें।
अक्षत रथनाभिवाला तार्क्ष्य हमारा कल्याण करें।
बृहस्पति हमें कल्याण प्रदान करें॥

१५. भद्रयाचना

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा
भद्रं पश्येमाक्षभिर् यजत्राः ।

May we, O gods ! listen with our
ears nothing but only good,
May we, O sacrificial ones !
observe with eyes nothing but good,

हे देव !
हम इन श्रोत्रसें कल्याण ही सुनते रहें,
यज्ञ में आये हुए हे देव,
हम इन नेत्र से कल्याण का दर्शन करें,

भद्रयाचना

स्थिरैर् अंगैस् तुष्टुवांसस् तनूभिर्
व्यशेम देवहितं यद् आयुः ॥
ऋ० १-८९-८

With steady limbs and firm forms
may we praise you always,
And may we enjoy happily
divinely ordained days.

अंग सब स्थिर हो हमारे
और सुदृढ देह हो,
देव द्वारा दी गई इस आयु को
हम पूर्ण सुख से संचलन करते रहें ॥

१६. शतायुकामना

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा
यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति
मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥
ऋ० १-८९-९

We have a hundred autumns lying before us,
Where may our forms reach old age, O gods!
Where sons of ours may also become fathers,
Break not in the middle that course of our life.

वृद्ध हो वार्धक्य से काया हमारी,
पुत्र भी बन जाय जब तक स्वयं पिता,
शत शरद की आयु दो, हे देव !
छेदना नहीं मध्य में जीवन–डोर को ॥

१७. ऋत से माधुरी

मधु वाता ऋतायते
मधु क्षरन्ति सिन्धवः ।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥

मधु नक्तं उतोषसो
मधुमत् पार्थिवं रजः ।
मधु द्यौर् अस्तु नः पिता ॥ ऋ. १–९०–६; ७

For us, who follow the Divine Order,
May the winds blow sweet,
May the rivers flow sweetness,
May the herbs become sweet.

Sweet nights and dawns,
Sweet the fragrant Earth,
Sweet be for us our Father, the Heaven.

सत्य के पालक अगर बन जायँ हम
तो मधुर बन जायगी वायु-लहर,
माधुरी बह लायेगी नदियाँ,
औ' मधुर बन जायेगी सब औषधि ॥

मधुरी निशा, मधुरी उषा,
औ' धूलि धरती की मधुर,
मधुमय गगन होगा पिता ॥

ऋत से माधुरी

मधुमान् नो वनस्पतिः
मधुमाँ अस्तु सूर्यः।
माध्वीर् गावो भवन्तु नः॥

ऋ. १–९०–८

May the lord of the forests
give us sweetness,
May the sun be sweet for us,
Sweet be his beams of light.

मधुदायी होगी वनस्पति,
मधुमान होगा सूर्य भी।
मधुमती उसकी (रश्मि) भी॥

ऋत से माधुरी

शं नो मित्रः शं वरुणः
शं नो भवत्वर्यमा।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः
शं नो विष्णुर् उरुक्रमः ॥

ऋ० १–९०–९

May Mitra be gracious to us,
May Varuna be gracious too,
May Aryaman gracious be,
Gracious be Indra; Brihaspati,
May all-pervading Vishnu be gracious to us.

मित्र हे कल्याण दो, कल्याणदाता हो वरुण,
कल्याणकारी अर्यमा,
कल्याणकारी इन्द्र हो, कल्याणकारी बृहस्पति,
सर्वत्रगामी विष्णु हो, कल्याणकर ॥

१८. दे सुभग दिन

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि
चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वम् अस्मे ।
पोषं रयीणाम् अरिष्टिं तनूनां
स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वम् अह्नाम् ॥
ऋ० २–२१–६

Bestow on us, O Indra, best of riches,
A mind efficient and a fortune fair;
And wealth abundant, bodies free from danger,
A winsome speech, auspiciousness of days.

हे इन्द्र, दे तू श्रेष्ठ धनका दान,
चित्त का कौशल्य औ' सौभाग्य दे ।
ऋद्धियों की वृद्धि, तन की स्वस्थता,
वाणी की मधुरिमा, दिन की सुभगता ।

१९. कल्याणपथ

स्वस्ति पन्थाम् अनु चरेम
सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर् ददताऽघ्नता
जानता सं गमेमहि ॥

ऋ० ५-५१-१५

May we follow the righteous path,
Like the Sun yonder and the Moon,
May we again be united with Him
Who gives, and knows, and strikes not.

चाँद-सूरज की तरह हम भी सदा
कल्याणकारी पंथ पर चलते रहें ।
और फिर उस देव से हो संगति
जो जानकर आघात ना दे, दान दे ॥

२०. अमृतयाचना

त्र्यम्बकं यजामहे
सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकम् इव बन्धनात्
मृत्योर् मुक्षीय माऽमृतात् ॥
ऋ० ७–५९–१२

That Tryambaka, the lord, do we worship,
Who fragrance spreads, increases nourishment,
Like a ripe cucumber from its stem;
May He release us from death,
not from immortality.

उस गन्धयुक्त पुष्टिवर्धक
त्र्यम्बक का ही हम यजन करें ।
वियुक्त पक्व खिरा फल सदृश जो
मृत्यु से हमें छुड़ा कर, अमरत्व दें ॥

२१. वीरवाणी

त्रातारो देवा अधि वोचता नो
मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पिः ।
वयं सोमस्य विश्वह प्रियासः
सुवीरासो विदथम् आ वदेम ॥
ऋ० ८-४८-१४

Speak to us, O preserving gods!
Let not sleep nor idle talk rule over us,
May we be always dear to god Soma,
May we, the heroes, address the congregations.

रक्षा करो, हे देवता, आदेश दो
निद्रा मिथ्यालाप के हम न वशीभूत हों ।
सोम के हम बन रहें प्रिय सर्वदा
औ' सभा में वीर की वाणी वदें ॥

२२. अमरता की याचना

यत्रानुकामं चरणं
त्रिनाके त्रिदिवे दिवः ।
लोका यत्र ज्योतिष्मन्तस्
तत्र माम् अमृतं कृधी-
न्द्रायेन्दो परि स्रव ॥

Where we can move as we desire,
In that third, the highest of heavens
Where the worlds are resplendent,
Make me immortal in that realm,
Flow forth for Indra, O Indu !

कर सकें जहाँ विचरण यथेच्छ,
है जहाँ लोक जाज्वल्यमान,
उस तीसरी उत्तम स्वर्गभूमि-
में, अमर करो, हे पावमान !
हे सोम ! इन्द्र के लिये बहो ।

BVBSSMV

अमरता की याचना

यत्रानन्दाश्च मोदाश्च
मुदः प्रमुद आसते ।
कामस्य यत्राप्ताः कामास्
तत्र माम् अमृतं कृधी-
न्द्रायेन्दो परि स्रव ॥
ऋ० ९–११३–९/११

Where joys abound, and cheers; all
Delights and transports are to the brim,
Where the deepest longings are fulfilled,
Make me immortal in that realm,
Flow forth for Indra, O Indu !

आनन्द, हर्ष, उल्लास जहाँ
हैं सदासर्वदा विद्यमान ।
हो तृप्त कामना सभी जहाँ
कर दो अमर वहाँ, पावमान !
हे सोम ! इन्द्र के लिये बहो ।

488

२३. कल्याणरस

योो वः शिवतमो रसस्-
तस्य भाजयतेह नः ।
उशतीरिव मातरः ॥
ऋ० १०-९-२

Make us recipient now and here of that
Most beatitudinous sap of yours,
Like mother's overwhelming with love.

जो तुम्हारा रस परम कल्याणप्रद
कर दो हमें भाजन उसीका, देव हे !
स्नेहरस बहाती हुई माँ के समान ॥

२४. अकेले न खायें

मोघम् अन्नं विन्दते अप्रचेताः
सत्यं ब्रवीमि वध इत् स तस्य ।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं
केवलाघो भवति केवलादी ॥

ऋ० १०–११७–६

An unwise man may obtain wealth
But it's with little purpose.
I tell you the truth–that wealth, indeed,
Is as good as his death.
He'll not offer it to the gods,
Nor share it with his friend,
His enjoyment of wealth is sin
Who selfishly does spend.

निर्बुद्धि को धन मिल गया तो व्यर्थ है ।
सच कहूँ ?–उसके तो धन ही मृत्यु है ।
देव को देगा न वह, ना मित्र को ।
जो अकेला खाय, केवल पापी है ॥

२५. जीवनकामना

उत वात पितासि न
उत भ्रातोत नः सखा ।
स नो जीवातवे कृधि ॥
ऋ० १०-१८६-२

Thou art, O Wind ! our father,
Thou art our friend, our brother,
O give us thou the life that
we may live.

वायु हे तुम हो पिता,
तुम भ्रात हो, तुम ही सखा ।
दो दान जीवन का हमें ॥

२६. ऐक्य की कामना

सं गच्छध्वं सं वदध्वं
सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे
संजानाना उपासते ॥

ऋ. १०–१९१–२

Meet together, speak together,
Let your minds be in concord,
As gods of yore being of one mind
Accept their sacrificial share.

साथ चल दो, साथ बोलो,
एक मन जानें तुम्हारे ।
पूर्वं भाग जैसे देवगण
करते ग्रहण हैं एक मन से ॥

ऐक्य की कामना

समानो मन्त्रः समितिः समानी
समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रम् अभि मन्त्रये वः
समानेन वो हविषा जुहोमि ॥

ऋ. १०-१९१-३

Common counsel, common meet,
Common the mind, their thoughts together,
A common chant do I teach you all,
And worship you all with a common oblation.

मन्त्र भी हो एक, हो समिति समान
और इनका चित्त भी–मन भी समान ।
मैं सिखा दूँ मन्त्र तुम को भी समान
अर्पण करूँ पूजा में आहुति समान ॥

ऐक्य की कामना

समानी व आकूतिः
समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो
यथा वः सुसहासति ॥

ऋ० १०-१९१-४

Common be your inclinations,
Be your hearts of one accord,
May you all be of one mind,
May all live well together.

चित्तका दर्शन समान
औ' हृदय भी हो समान ।
मन तुम्हारे हो समान
जैसे जीवन एकतान ॥

२७. यज्ञ से कल्याण

आयुर् यज्ञेन कल्पतां
प्राणो यज्ञेन कल्पतां
चक्षुर् यज्ञेन कल्पतां
श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां

All power to our life through sacrifice!
All power to our life-breath through sacrifice!
All power to our eyes through sacrifice!
All power to our ears through sacrifice!

आयु का सामर्थ्य पायें यज्ञ से
प्राण का सामर्थ्य पायें यज्ञ से
नेत्र का सामर्थ्य पायें यज्ञ से
श्रोत्र का सामर्थ्य पायें यज्ञ से

यज्ञ से कल्याण

पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां
यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् ।
प्रजापतेः प्रजा अभूम
स्वर् देवा अगन्मामृता अभूम ॥

य० ९–२१

All power to our backs through sacrifice !
All power to sacrifice through sacrifice !
We have become the progeny of Prajapati,
We have attained the heavens, O gods !
We have become immortal !

पृष्ठ का सामर्थ्य पायें यज्ञ से
यज्ञ का सामर्थ्य पायें यज्ञ से ।
हम प्रजापतिकी प्रजा हैं बन गये
ओ देवगण !
स्वर्ग पहुँचे हैं, अमर हम बन गये ॥

२८. यह सब दो मुझे

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि ।
वीर्यम् असि वीर्यं मयि धेहि ।
बलम् असि बलं मयि धेहि ।
ओजोऽसि ओजो मयि धेहि ।
मन्युर् असि मन्युं मयि धेहि ।
सहोऽसि सहो मयि धेहि ।

य० १९-९

Lustre Thou art, give me lustre !
Heroism Thou art, give me heroism !
Strength Thou art, give me strength !
Energy Thou art, give me energy !
Spirit Thou art, give me spirit !
Defiance Thou art, give me defiance !

तू तेज, मुझ में तेज का आधान कर !
तू वीर्य, मुझ में वीर्य का आधान कर !
तू शक्ति, मुझ में शक्ति का आधान कर !
तू ओज, मुझ में ओज का आधान कर !
तू मन्यु, मुझ में मन्यु का आधान कर !
तू विजय, मुझ में विजय का आधान कर !

२९. सामाजिक संवाद

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च
सम्यञ्चौ चरतः सह ।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं
यत्र देवाः सहाग्निना ॥

य० २०–२५

Where scholars and rulers move
together in concord,
Where Devas dwell with Agni,
That world I know as holy.

ज्ञानियों और क्षत्रियों का मेल से संचार हो ।
अग्नि के संयोग में जिस जगह देवों का निवास ।
उस स्थान को माना है मैंने पुण्यवास ॥

३०. राष्ट्रकल्याण

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्
आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां
दोग्ध्री धेनुर् वोढानड्वान् आशुः सप्तिः पुरन्धिर् योषा

In this our country, O Brahman!
May the priests be born brilliant
with sacred knowledge,
May the warriors be born brave,
skilful archers, excellent marksmen,
invincible chariot-fighters,
May the cows yield plenty of milk,
The oxen be tireless, the horses be swift,
The women be skilful housewives,

ब्रह्मन्, भगवन् हमारे राष्ट्र में
ज्ञानसे भास्वान् ब्राह्मण जन्म ले।
योद्धा हमारे शूर, तीरन्दाज और महारथी।
हों दुधारु गाय, बैल सशक्त, वेगी अश्व हो,
हों, स्त्रियाँ गृहिणी कुशल,

राष्ट्रकल्याण

जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य
यजमानस्य वीरो जायतां
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु
फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां
योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥

य० २२–२२

To him who offers this sacrifice,
May a youthful heroic son be born, a champion,
a chariot-fighter, a persuasive speaker in assemblies,
May heavens rain in accordance with our needs,
May our plants ripen and bear fruits in season,
May joy and prosperity be to us.

इस यज्ञ के यजमान के घर पुत्र हो
विजयी, प्रखर वक्ता, युवा, रथचारी, वीर।
ब्रह्मन्, हमारे राष्ट्र में
होती रहे वर्षा यथावश्यक सदा।
औषधी बनती रहे फलवती अपने समय से।
सर्वदा स्थिर हो हमारा योगक्षेम।

३१. पवित्र मन

यज् जाग्रतो दूरम् उदैति दैवं
तद् उ सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिर् एकं
तन् मे मनः शिवसंकल्पम् अस्तु ॥

य० ३४–१

That divine which moves afar from the waking,
As alike from the sleeping,
That far-moving, that light of lights, my mind
May firmly be resolved on what is good.

जो जागत में दूर जा उठता
और सोते में भी वैसी ही गति ।
दूरगामी, ज्योतियों की ज्योति एक
मन मेरा वह सदा शिवसंकल्प हो ॥

३२. शिवसंकल्प मन

यत् प्रज्ञानम् उत चेतो धृतिश्च
यज् ज्योतिर् अन्तर् अमृतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते
तन् मे मनः शिवसंकल्पम् अस्तु॥
य० ३४–३

That which is deep knowledge, intellect, memory,
And that immortal inner light of beings,
Save for which no action is performed,
That my mind
May firmly be resolved on what is good.

प्रज्ञान है, जो मेधा और स्मृति है,
जो है अंतर की अमर ज्योति प्राणी में;
जिसके बिना कुछ कर्म हो सकता नहीं,
मन मेरा वह सदा शिवसंकल्प हो ॥

३३. पूर्णता

ऋचं वाचं प्रपद्ये
मनो यजुः प्रपद्ये
साम प्राणं प्रपद्ये
चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये
वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ ॥

य० ३६-१

I take refuge in Ric, the speech,
I take refuge in Yajus, the mind,
I take refuge in Saman, the breath,
I take refuge in sight and hearing,
Energy of speech with strength
My in-breath and out-breath.

वाणीरूप ऋचा की शरण में जाऊँ
मनरूप यजु की शरण में जाऊँ
प्राणरूप साम की शरण में जाऊँ
दृष्टि और श्रुति की शरण में जाऊँ
वाणी की ओजस्विता, वीर्य की ओजस्विता बलपूर्ण हो
प्राण और अपान की दृढ़ता मुझ में रहे ॥

पूर्णता

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो
वातितृण्णं बृहस्पतिर् मे तद् दधातु ।
शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ॥

य० ३६–२

Whatever is the defect of my eye, of my heart,
of my mind,
Or whatever is the excess thereof;
May Brihaspati set that right,
May He the lord of the world, be gracious to us.

नेत्र की, मन की, हृदय की न्यूनता का
दोष वा अतिशय का मुझ में जो भी हो ।
उसे बृहस्पति दूर कर, दे पूर्णता,
भुवन का पति हो हमें कल्याणप्रद ।।

३४. शान्ति

द्यौः शान्तिर् अन्तरिक्षं शान्तिः
पृथिवी शान्तिर् आपः शान्तिर्
ओषधयः शान्तिर् वनस्पतयः
शान्तिर् विश्वे देवा शान्तिर् ब्रह्म
शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिर्
एव शान्तिः। सा मा शान्तिर् एधि॥

य० ३६--१७

Peace in the heavens, in mid-air, on the Earth,
Peace be in water, in the plants, in forests
Peace be to all the Devas, in Brahman, everywhere,
Peace be in Peace; may that peace come to me.

नभ में शान्ति, अन्तरिक्ष में शान्ति,
पृथिवी में शान्ति, औषधियां में शान्ति,
वनस्पतियों में शान्ति, विश्वदेवों में
शान्ति, ब्रह्म शान्ति, सर्व शान्ति,
शान्ति ही शान्ति, वह शान्ति
मुझे प्राप्त हो ॥

३५. निष्काम कर्मयोग

ईशा वास्यम् इदं सर्वं
यत् किं च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा
मा गृधः कस्यस्विद् धनम् ॥

All this is the abode of Lord
Which moves in the transient world,
So enjoy thou by renouncing,
Do not grab anyone's wealth.

ईश से व्याप्त सब जो
नश्वर जगत में गतिशील हैं ।
इसलिये भोगो त्याग से,
धन ना हरो किसी का कभी ॥

निष्काम कर्मयोग

कुर्वन्नेवेह कर्माणि
जिजीविषेच्छतं समाः ।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति
न कर्म लिप्यते नरे ॥

य० ४०.१-२

You should live here for hundred years
Performing your duties well,
There is no other path for you, but thus
The actions will not besmear man.

सुचारु रूप में फर्ज अदा कर,
जीना तुम्हें शत वर्ष तक ।
सन्मार्ग है यही, जो जीवों को,
कर्म-बन्धन से छुड़ाता ॥

३६. वरप्राप्ति

भगस्य नावम् आ रोह
पूर्णाम् अनुपदस्वतीम् ।
तयोप प्रतारय
यो वरः प्रतिकाम्यः ॥

अ० २–३६–५

Embark the ship of Bhaga,
Which is whole and ever-unfailing,
By it, cross over to thy chosen consort.

भग की अखंड सर्वदा सफल नौका में ।
आरोहण कर, सुंदरी, पार कर जा तू ।
कर ले वरण तू अपने प्रितम को ॥

३७. चित्त को आकर्षण करें

यद् वो मनः परागतं
यद् बद्धम् इह वेह वा ।
तद् व आ वर्तयामसि
मयि वो रमतां मनः ॥

अ० ७–१२–४

Whether your mind is moving afar,
Or whether it is bound here or there,
I turn it round and bring it back;
May your mind delight in Me !

अगर तुम्हारा मन कहीं है भटकता
या इसी में या उसी में है बँधा ।
मैं उसे मोड़ कर ले आता हूँ यहाँ
मन तुम्हारा मुझ में रमता रहे ॥

३८. आचार-परंपरा

अपक्रामन् पौरुषेयाद्
वृणानो दैव्यं वचः ।
प्रणीतीर् अभ्यावर्तस्व
विश्वेभिः सखिभिः सह ॥

अ० ७–१०५–१

Turn away from the human world,
And elect for Divine utterance;
Take your friends along with you,
And toe the line of best traditions.

मानव जगत से तोड़ नाता
दिव्य वाणी का करो वरण ।
मित्रों को ले लो साथ, श्रेष्ठ
आचारपन्थ पर धरो चरण ॥

३९. स्वास्थ्यकामना

वाङ् म आसन् नसोः प्राण-
श्चक्षुर् अक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः ।
अपलिताः केशाः अशोणा
दन्ता बहु बाह्वोर् बलम् ॥

अ० १९–६०–१

May I have clear speech,
Breath in my nostrils,
Sight in my eyes,
Hearing in my ears.
May I have hair not grey,
Teeth not purple,
Much strength in my arms.

हो शुद्ध वाणी, नासिका में प्राण मेरे
आँख में हो दृष्टि, कर्णों में श्रवण ।
केश ना हो धवल, पीले दाँत ना हो,
और मेरे बाहुओं में बल अतुल ॥

४०. शुभ गुणों की कामना

सत्यं बृहदृतम् उग्रं दीक्षा तपो
ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति ।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्यु-
रुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ॥

अ० १२-१-१

Pervading Truth, Strong Order, Consecration,
Austerity, Prayer and Sacrifice—
These uphold the Earth.
May She, the wide, the Queen of past and future,
Expand the world for us.

सत्य व्यापक, दृढ नियम ऋत के, औ' ब्रह्म
यज्ञ, तप, दीक्षा पृथिवी को धारते हैं ।
पृथ्वी है साम्राज्ञी भूत-भविष्य की
वह हमारे लोक को विस्तृत करें ॥

ॐ

भक्तियोग

THE PATH OF DEVOTION

४१. कल्याणकर पिता

स नः पितेव सूनवे-
ऽग्ने सूपायनो भव ।
सचस्वा नः स्वस्तये ॥

ऋ० १–१–९

Like father to his son, O Agni!
Be Thou easy of access to us,
Be with us for a blissful life.

पिता के पास पुत्र जैसे
तुम्हारे पास रहें हम वैसे ।
अग्नि! हो जीवन आनन्दमय ॥

४२. मन्त्रप्रेम

परि त्वा गिर्वणो गिर
इमा भवन्तु विश्वतः ।
वृद्धायुं अनु वृद्धयो
जुष्टा भवन्तु जुष्टयः ॥

ऋ० १–१०–१२

May these songs, O lover of songs!
Encompass Thee from all directions
Let them glorify Thee, the glorious,
May they, the loving, be loved.

चाहक हे मेरे मन्त्रों के
ये तुम्हें घिर लें चहुँ दिश ।
ये तुम्हे भव्य को भव्य करें
इन प्रेमी ऋचा को पुष्ट करें ॥

४३. विष्णु का परम धाम

तद् विष्णोः परमं पदं
सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवीव चक्षुराततम् ॥

ऋ० १–२२–२०

That highest abode of Vishnu,
The poets always look upon
Like a brilliant eye of the heaven.

वह देव विष्णु का परम धाम
नित देख रहे हैं ये कविजन ।
जैसे हो नभ का नेत्र विशाल ॥

४४. भद्र विचार

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो-
ऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे अस-
न्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥
ऋ० १-८९-१

May noble thoughts come to us from all directions,
Undeceived, unencumbered, overflowing,
So the gods always be for the upward march of ours,
Be they for our prosperity and always protect us unfailing.

सभी दिशाओं से हमें प्राप्त हो शुभ विचार
निष्कपट, बन्धनरहित, प्रबल ।
सद्-उन्नति के लिये हमें सदा
देवों का साहाय्य प्राप्त हो ।
अप्रमत्त देव सर्वदा हमारी रक्षा करें ॥

४५. माँ का स्तन

यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूर्
येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि ।
यो रत्नधा वसुविद् यः सुदत्रः
सरस्वति तम् इह धातवे कः ॥

ऋ० १–१६४–४९

That exhaustless breast of Thine,
That source of well-being,
With which Thou nourishest all coveted things,
Which contains treasures and wealth,
Which confers excellent gifts,
That breast of Thine, O Sarasvati,
Lay Thou bare for our nourishment.

हे माता मेरी सरस्वती !
तेरा स्तन है सुख का निधान
अक्षीण, सब सुखों का प्रदान,
धनदायी, रत्नधारी, उदार,
सुख काज खोल दे वह अपार ॥

४६. सदा जागृत रहो

योो जागार तमृचः कामयन्ते
यो जागार तमु सामानि यन्ति ।
यो जागार तम् अयं सोम आह
तवाहम् अस्मि सख्ये न्योकाः ॥

ऋ० ५–४४–१४

Him who is awake do the Riks desire,
Him who is awake do the Saamans approach,
Who is awake, to him does this Soma say,
" My abode is in your friendship. "

जागता है जो उसीकी कामना करती ऋचा ।
रहता जाग्रत जो उसीके पास सामन् जायेंगे ॥
जो नहीं सोया उसीको सोम कहता है, 'सुनो,
है तुम्हारी मित्रता में ही, सखे, मेरा निवास' ॥

४७. मीनपियासी

अपां मध्ये तस्थिवांसं
तृष्णाविदज् जरितारम् ।
मृळा सुक्षत्र मृळयः ॥

ऋ० ७–८९–४

The thirst envelops me, your bard, O lord!
Who am standing in the midst of ocean;
Help me, O lord! be kind to me.

मैं जल-निधि में खड़ा हूँ स्तोता, तेरा,
तो भी तृष्णा का मुझे पीड़ता है पाश ।
हे कृपावंत, केवल तेरी है आस ॥

४८. देवकृपा से विजय

त्वयेद् इन्द्र युजा वयं
प्रति ब्रुवीमहि स्पृधः ।
त्वम् अस्माकं तव स्मसि ॥

ऋ० ८-९२-३२

Supported by thee, O Indra!
May we answer those who defy us,
Thou art ours and we are Thine.

इन्द्र ! तेरे योग से बल प्राप्त कर
स्पर्धकों का सामना हम कर सकें ।
तू हमारा है, हैं तेरे हम सदा ॥

४९. देव की कृपा

त्वं हि नः पिता वसो
त्वं माता शतक्रतो बभूविथ ।
अथा ते सुम्नम् ईमहे ॥

ऋ० ८-९८-११

You are O Vasu! our father,
You, O Shatakratu! our mother,
May we obtain your favour.

हे वसु, तू ही हमारा है पिता
औ' तू ही माता हमारी, शतक्रतु !
हम सदा तेरी कृपा के पात्र हों ॥

५०. पवित्रता की कामना

पुनन्तु मा देवजनाः
पुनन्तु मनवो धिया।
पुनन्तु विश्वा भूतानि
पवमानः पुनातु मा॥

ऋ० ९-६७-२७

May the Divine Beings purify me,
May the thoughts purify my intellect,
May all the beings make me pure,
May the purifying Soma purify me.

देवजन मुझे पवित्र करें।
सद्विचार मेरी धृांत्त को पवित्र करें।
सभी प्राणी मुझे पवित्र करें।
सोम पवमान मुझे पवित्र करें।

५१. ऋषि का शब्द

युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्
वि श्लोक एतु पथ्येव सूरेः ।
श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा
आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः ॥

ऋ० १०–१३–१

With obeisance do I join you with the Mantra of yore,
May this my utterance, beneficial to the poet,
reach in all directions,
May all the sons of immortality,
Residing in the celestial abodes, listen to it.

अर्पित तुम्हें प्राचीन स्तुति, मेरे प्रणाम,
श्लोक ऋषि का यह दशों दिश फैल जाय ।
औ' अमृत के पुत्र सब सुन लें इसे
दिव्य धामों में सदा जिनका निवास ॥

५२. परम तत्त्व की जिज्ञासा

यो नः पिता जनिता यो विधाता
धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यो देवानां नामधा एक एव
तं संप्रश्नं भुवना यन्त्यन्या ॥
ऋ० १०-८२-३

Who is the father, the creator, the master of us all,
Who, all the worlds and all the beings, knows,
Who, though one, bears names of different deities,
Him do the others seek with searching curiosity.

जो हमारे पिता, जो हैं स्रष्टा, धाता,
जो सभी तेजों का-भुवनों का है ज्ञाता ।
नाम कई देवों के, पर जो एक है,
खोजने उत्सुक उसे है अन्य लोक ॥

५३. आदिदेव कौन ?

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे
भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

ऋ० १०–१२१–१

The Golden Embryo existed in the beginning,
He was the only lord of this creation,
He upheld both this heaven and this earth,
Which god shall we adore with our oblation ?

पहले तो हिरण्यगर्भ हुआ
पति भूतमात्र का वही एक ।
नभ–धरती का आधार बना
किस देव को हविष् अर्पित हो ?

५४. दीर्घायुष-याचना

अग्ने केतुर् विशाम् असि
प्रेष्ठः श्रेष्ठः उपस्थसत् ।
बोधा स्तोत्रे वयो दधत् ॥

ऋ० १०-१५६-५

O Agni ! thou art the beacon of peoples,
The best, the dearest, staying near us,
Know thou thy singer, give him a long life.

ध्वजचिह्न प्रजा का हो, अग्ने ! अभिराम ।
प्रियतम हो, श्रेष्ठ तुम्हीं सन्निकट विराजमान ।
कवि को पहचान, दो दीर्घायुष-दान ॥

५५. इन्द्र की पूजा

गायन्ति त्वा गायत्रिणो-
ऽर्चन्त्यर्कमर्किणः ।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत
उद्वंशम् इव येमिरे ॥
सा० १-१०-१/१३४४

Thee the singers sing,
To thee the seers chant their hymns,
Thee the Brahmins raise, O Shatakratu !
Up, as they would your banner.

ऋषिगण ऋचाओं से करे तेरा यजन,
उद्गातृगण गाते हैं तेरा गान ।
हे, शतक्रतु ! ब्राह्मणों ने भी तुझे
है उठाया ऊँचा इन्द्रध्वज समान ॥

५६. यज्ञ से कामना की प्राप्ति

पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्राः वसवः समिन्धतां
पुनर् ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः।
घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व
सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥

य० १२-४४

May Adityas, Rudras, Vasus enlighten you!
May Brahmins make you brilliant through sacrifice!
May your form grow through sacrificial ghee!
May the wishes of the sacrificer come true!

फिर तुम्हें प्रज्वलित कर दें रुद्र, वसु, आदित्यगण !
फिर तुम्हें यज्ञों से तेजस्वी बना दे ब्रह्मगण !
फिर करो घृतआहुति से तुम अपना रूप वर्धित !
वृद्धि पाकर सिद्ध कर दो कामना यजमान की ॥

५७. प्रियता की कामना

रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु
रुचं राजसु नस्कृधि ।
रुचं विश्येषु शूद्रेषु
मयि धेहि रुचा रुचम् ॥

य० १८–४८

Make us beloved among the Brahmins,
Make us beloved among the Rajanyas,
Beloved among the Vaishyas and Shudras,
Make me beloved of love itself.

ब्राह्मणों के समूह में प्रिय कर दो हमें
राजगण में भी करो प्रियता प्रदान ।
वैश्य–शूद्रों में भी भाजन प्रेम का
या स्वयं प्रिय प्रेम का कर दो मुझे ॥

५८. ऋत की रक्षक अदिति

महीमु षु मातरं सुव्रतानाम्
ऋतस्य पत्नीम् अवसे हुवेम ।
तुविक्षत्राम् अजरन्तीम् उरूचीं
सुशर्माणम् अदितिं सुप्रणीतिम् ॥

य० २१-५

The Great Mother of those whose sway is just,
Queen of Universal Order, Her we invoke
for protection,
That Aditi, the great ruler, undecaying,
far-expanding,
Good protectress, noble guide.

आराधना करते हैं हम उस अदिति की
साम्राज्ञी जो ऋत की है व्रतमाता महान ।
वह अजर, राज्ञी, विश्व-व्यापिनी
सुखदायिनी पथदर्शिनी रक्षा करे ॥

५९. प्रियत्व की कामना

प्रियं मा कृणु देवेषु
प्रियं राजसु मा कृणु।
प्रियं सर्वस्य पश्यतः
उत शूद्र उतार्ये॥

अ० १९-६२-१

Make me beloved of gods,
Make me beloved of kings,
Of low and of elite,
Make me beloved of all who look upon me.

प्रिय मुझे बना दो देवों का
प्रिय करो मुझे राजन्यों का।
प्रिय शूद्रों का औ' आर्यों का
जो मुझे देख ले उन सब का॥

६०. वेदस्तुति

स्तुता मया वरदा वेदमाता
प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् ।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं
कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् ।
मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ॥

अ० १९-७१-१

The blissful mother Veda have I praised,
She purifies the twice-born, inspires them,
May she bestow upon me
The life, and breath and progeny and cattle,
And fame and riches and lustre of divine knowledge.
And then may she ascend to the world of Brahman.

मैंने वरदायिनी वेद मात का स्तवन किया है,
वह द्विज की पावनकारिणी हमें प्रेरे ।
दे प्राण, आयु, संतति, पशु, कीर्ति,
द्रव्य, ब्रह्म का तेज मुझे
वह ब्रह्मलोक में गमन करे ॥

६१. वेदगीत

यस्मात् कोशादुदभराम वेदं
तस्मिन्नन्तर् अव दध्म एनम्।
कृतम् इष्टं ब्रह्मणो वीर्येण
तेन मा देवास् तपसावतेह ॥

अ० १९-७२-१

From which treasure we brought the Vedas out,
To that treasure we return it again.
Worship I have performed with the power of prayers,
By that penance, may gods protect me here.

जिस कोश से हमने उठाया वेद को
रख देते हैं उस कोश में वापस उसे ।
मंत्र के बल से पूजन कर लिया
उस तप से देवों की हमें रक्षा मिले ॥

६२. अग्निदेव

सुदक्षो दक्षैः क्रतुनासि सुक्रतुर्
अग्ने कविः काव्येनासि विश्ववित् ।
वसुर् वसूनां क्षयसि त्वम् एक इद्
द्यावा च यानि पृथिवी च पुष्यतः ॥

ऋ० १०–९१–३

With powers thou art most skilful,
With wisdom thou most wise,
With an eye transcendent, O Agni,
A poet all-knowing thou art.
Thou the only lord of brilliant things,
And the only master thou art
Of all the things that the heaven above
And the earth below do nourish.

तु कर्मकुशल है कौशल में, बुद्धि में श्रेष्ठ तू बुद्धिमान ।
कविराज क्रान्तदर्शी, अग्ने, सारे जग का तू ज्ञानवान ।
तू तेज परम तेजस्वी का है स्वामी उन सब का महान ।
जिनका पोषण करते हैं ये धरती विशाल, नभ भासमान ।।

ॐ

ज्ञानयोग

THE PATH OF KNOWLEDGE

६३. वेद का अर्थज्ञान

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्
यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः।
यस्तन्न वेद किम् ऋचा करिष्यति
य इत् तद् विदुस्त इमे समासते॥

ऋ० १–१६४–३९

He who knows not the eternal syllable of the Veda,
That superb abode in which dwell all the gods,
What will he do with the Vedas ? Only those
Who know the Vedas well, sit here in peace.

वेद के अक्षर परम आकाश हैं
विश्व देवों का उसी में है निवास ।
जो न जाने यह–ऋचा से क्या करेगा ?
जो इसे है जानता–शान्ति से रहेगा ।

६४. गणपति की स्तुति

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे
कविं कवीनाम् उपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पते
आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ॥

ऋ० २-२३-१

We invoke thee, the leader of our host,
The poet of poets, most renowned of all,
The Supreme lord of hymns,
O Brahmanaspati !
Come, sit here with favours, listening to us.

हे गणों के गणपति, आवाहन करते हैं तुम्हारा,
हे कवि कवियों के, सबसे अधिक ख्यात ।
ब्रह्मणस्पति, ब्रह्मगानों के पति,
आओ, बैठो, स्तुति सुनो, उपहार दो ॥

६५. गायत्रीमंत्र–प्रकाश की कामना

तत् सवितुर् वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

ऋ० ३–६२–१०

That adorable glory of
The brilliant Sun, we contemplate.
May He inspire our intellects.

उस सूर्य के वरणीय पावक तेज को
हम चित्त में धारण करें ।
वह हमारे चित्त को प्रेरे सदा ॥

६६. सन्मार्गबुद्धि

इन्द्र क्रतुं न आ भर
पिता पुत्रेभ्यो यथा।
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि
जीवा ज्योतिर् अशीमहि ॥

ऋ० ७-३२-२६

Bring wisdom to us, O Indra!
As the father does to his sons,
Instruct us in those precepts,
O oft-invoked lord!
That we may enjoy the light
of a full life.

हे इन्द्र, ज्ञान दो हमें, पिता
जैसे पुत्रों को दे जाये।
वह राह दिखा दो, जिससे यह
जीवन प्रकाशमय हो जाये ॥

६७. मित्रता का द्रोह

यस्तित्याज सचिविदं सखायं
न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति ।
यदीं शृणोत्यलकं शृणोति
न हि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम् ॥
ऋ० १०–७१–६

For him who deserts a friend knowing friendship,
There is no longer a share even in speech,
Whatever doth he hear, he hears in vain,
For sure, he does not know the path of goodness.

छोड़ दे जो सत्यवचनी मित्र को,
वाणी में न स्थान है उसके लिये ।
जो सुना उसने, व्यर्थ ही सुन लिया,
जानता नहीं वह सुकृत के पंथ को ॥

६८. किसको हविष् अर्पण करें ?

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व
उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
ऋ० १०–१२१–२

Who is the giver of soul, the giver of strength,
And whose commands even all the gods obey,
Whose shadows are immortality and death,
Which God shall we adore with our oblation ?

जो प्राण और बल दे, जिसकी
आज्ञा पालन सब देव करें।
परछाँई जिसकी अमृत औ' मृत्यु
किस देव को हविष् अर्पित करें ?

६९. ऋषि की ब्रह्मवाणी

अहमेव स्वयम् इदं वदामि
जुष्टं देवेभिर् उत मानुषेभिः ।
यं कामये तं तम् उग्रं कृणोमि
तं ब्रह्माणं तम् ऋषिं तं सुमेधाम् ॥
ऋ० १०–१२५–५

Yes, I myself announce this—
Which gods and men alike rejoice to hear,
I make him brilliant whom but I desire,
I make him Brahman, him a sage, him gifted.

मैं स्वयं कहती हूँ यह—जो है सुखद
देवगण को और मानव को समान ।
मैं जिसे चाहूं उसी को उग्र कर दूँ
ब्रह्म कर दूँ मैं उसे, ऋषि, बुद्धिमान् ॥

७०. व्रत से सत्य तक

व्रतेन दीक्षाम् आप्नोति
दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धाम् आप्नोति
श्रद्धया सत्यम् आप्यते॥

य० १९-३०

By sacrificial vow one obtains consecration,
By consecration one obtains Dakshina,
By Dakshina one obtains faith
By faith one obtains Truth.

व्रत से दीक्षा को पाता है
दक्षिणा प्राप्त हो दीक्षा से।
दक्षिणा करे श्रद्धा प्रदान
श्रद्धा से सत्य मिले महान॥

७१. मेधाकामना

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥

मेधां मे वरुणो ददातु मेधाम् अग्निः प्रजापतिः ।
मेधाम् इन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ॥

य० ३२–१४; १५

With that talent which gods and manes enjoy,
Do make me wise today, O Agni ! Hail !
May Varuna bestow talent upon me,
May Agni and Prajapati give me talent,
May Indra and Vayu grant me talent,
May Dhatri give me talent, Hail !

देवगण, पितरों सदा आराधना करते हैं जिसकी ।
उसी मेधा से मुझे मेधावी कर दो, अग्नि ! स्वाहा ॥

वरुण, अग्नि औ' प्रजापति मेधा मुझे करे प्रदान ।
इन्द्र भी, वायु भी, धाता भी करे मेधा प्रदान ॥

७२. गृहसंवाद

येन देवा न वियन्ति
नो च विद्विषते मिथः ।
तत् कृण्मो ब्रह्म वो गृहे
संज्ञानं पुरुषेभ्यः ॥

अ० ३–३०–४

That by which the gods
do not part from each other,
do not hate each other,
For that concord
Among the members of your house
I utter this prayer.

देवगण जिससे अलग होते नहीं
ना ही जिससे द्वेष करते हैं परस्पर ।
मतिमेल वह घर में तुम्हारे भी रहे
उस हेतु अर्पित यह हमारी प्रार्थना ॥

७३. जीवन के लिये प्रार्थना

सर्वो वै तत्र जीवति
गौर् अश्वः पुरुषः पशुः ।
यत्रेदं ब्रह्म क्रियते
परिधिर् जीवनाय कम् ॥

अ० ८-२२-५

There live, indeed, all creatures-
All cows, all horses, all men,
Where this Veda is offered
For life's protection well.

जीते हैं निश्चित उस स्थान धेनु
अश्वों-मनुजों-पशुओं का धन ।
जीवन-रक्षा के हेतु हुआ
इस वेद का जहाँ उच्चारण ॥

७४. ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचर्येण तपसा
राजा राष्ट्रं वि रक्षति।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण
ब्रह्मचारिणम् इच्छते॥
अ० ११-५-१७

By the spiritual discipline of Brahmacharya,
The king protects his kingdom.
By the spiritual discipline of Brahmacharya,
The preceptor seeks the pupil.

ब्रह्मचर्य के तप से ही
राजा रक्षा करे राष्ट्र की।
ब्रह्मचर्य से ब्रह्मचारी की
इच्छा करते हैं आचार्य॥

ॐ

राजयोग

THE PATH OF MYSTICISM

७५. देव का काव्य

अन्ति सन्तं न जहाति
अन्ति सन्तं न पश्यति ।
देवस्य पश्य काव्यं
न ममार न जीर्यति ॥

अ० १०–८–३२

He is near, one cannot leave Him,
He is near, one cannot see Him,
Behold the marvellous craft of the Lord,
He does not die, nor does He grow old.

है निकट, उसे न छोड सकें
है निकट तो भी न देख सकें ।
यह देख देव का चमत्कार
होता न जीर्ण, न मरता है ॥

७६. वाणी के चार चरण

चत्वारि वाक् परिमिता पदानि
तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः ।
गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति
तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति ॥
ऋ० १-१६४-४५

Speech is measured in four grades,
Brahmins of divine wisdom know them all,
First three - concealed in secret - make no motion,
Fourth is the grade of Speech which people speak.

वाणी के हैं चार विभाग
ब्रह्मज्ञानी सब को जानता ।
स्थिर बन छिपे प्रथम तीन
चौथी-तुरीय वाणी मानव उच्चरता ॥

७७. सूर्य–देवों का नेत्र

चित्रं देवानाम् उदगाद् अनीकं
चक्षुर् मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं
सूर्य आत्मा जगतस् तस्थुषश्च ॥

ऋ० १–११५–१

Here comes forth the beautiful countenance of gods,
The eye of Mitra, of Varuna, of Agni,
He has pervaded Heaven and Earth and the air between,
He is the soul of all that moves and moves not.

यह उठा देवों का सुन्दर रूप,
मित्र का, अग्नि–वरुण का नेत्र।
स्वर्ग–पृथिवी–नभ उसीने भर दिये,
सूर्य आत्मा है जगत्–चर–अचर का ॥

७८. एक को विप्रों ने अनेक कहा।

इन्द्रं मित्रं वरुणम् अग्निम् आहुर्
अथो दिव्यः स सुपर्णो गुरुत्मान्।
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति
अग्निं यमं मातरिश्वानम् आहुः॥

ऋ० १–१६४–४६

They call Him Indra, Mitra, Varuna, Agni,
Or that heavenly golden-winged Eagle,
By many names wise call Him who is One,
They call Him Agni, Yama, Maatarishvan.

वह इन्द्र भी है, मित्र भी, अग्नि, वरुण,
औ' वही है दिव्य पंखी गुरुत्मन्।
उस एक को विप्रों ने बहुधा है कहा—
यम कहा, अग्नि कहा, औ' मातरिश्वन्॥

७९. एक ही अनेक

एक एवाग्निर् बहुधा समिद्ध
एकः सूर्यो विश्वम् अनु प्रभूतः।
एकैवोषाः सर्वम् इदं वि भाति
एकं वा इदं वि बभूव सर्वम्॥

ऋ० ८–५८–२

One is Agni kindled in many places;
And one the Sun that shines upon all things;
One is the Dawn that illumines this all;
One is, indeed, that has enlivened this all.

एक अग्नि प्रज्वलित है हर जगह,
एक सूरज विश्व में फैले उजाला ।
एक ऊषा से यह सब कुछ है प्रकाशित,
एक ही से है समूचा विश्व प्राणित ॥

८०. वाणी का अर्थदर्शन

उत त्वः पश्यन् न ददर्श वाचम्
उत त्वः शृण्वन् न शृणोत्येनाम् ।
उतो त्वस्मै तन्वं वि सस्रे
जायेव पत्य उशती सुवासाः ॥

ऋ० १०–७१–४

Someone may see and yet not see the Vaac,
Yet another may hear and still not hear her,
She will reveal her noble form to chosen some
Like a loving wife, fair-clad, to her consort.

देख ले कोई वाणी को फिर भी इसे न देखें
आर सुनकर भी न कोई इसे सुन सके ।
यह किसी को दिखाये रूप अपना
स्वामी को जैसे सजीली सुंदरी ॥

८१. मित्रों के प्रकार

अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो
मनोजवेष्वसमा बभूवुः ।
आदघ्नास उपकक्षास उ त्वे
ह्रदा इव स्नात्वा उ त्वे ददृश्रे ॥

ऋ. १०–७१–७

The friends endowed alike in sight and hearing,
In quickness of their mind may not be equal,
Some are like ponds that reach to the mouth or shoulder,
While some like lakes wherein a man can bathe.

हर तरह के मित्र होते हैं यहाँ,
आँख हैं सबकी, सभी के कान हैं,
चित्तगति पर एक-सी सब की नहीं ।
मुख-स्कन्ध तक जल-कुण्ड-से हैं कोई
तो स्नान योग्य कोई सरोवर-से ॥

८२. विश्वपुरुष

सहस्रशीर्षाः पुरुषः
सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा
अत्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम् ॥

ऋ. १०–९०–१

Thousand–headed is He,
With thousand eyes and feet,
Encompassing the Earth on all the sides
He has transcended it by fingers ten.

दिव्य पुरुष के सिर अनेक
आँखें अगणित हैं चरण अनेक ।
वह घेर भूमि को चहूँ ओर
दस अँगुल ऊपर उठा हुआ ॥

८३. ऋषि की वाणी–प्रकृति

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां
चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् ।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा
भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम् ॥

ऋ. १०–१२५–३

I am the Queen, I bring together treasures,
I am the knower, the first worthy of worship,
The gods have established me in various places,
I enter numerous places, many a form.

साम्राज्ञी हूँ, संपत्ति का संयोग करती,
पूजनीयों में प्रथम, ज्ञानेश्वरी ।
देवों ने मुझे बसाया कई जगह,
मैं बहु-स्थल-वासिनी, बहुरूपिणी ॥

८४. सृष्टि का धारक

इयं विसृष्टिर् यत आ बभूव
यदि वा दधे यदि वा न।
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्
त्सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद॥

ऋ. १०–१२९–७

He from whom this world arose,
Did He hold it ? or, did He not ?
Who surveyed it in the highest heaven,
Did He know it ? or, did He not ?

सृष्टि यह जिस तत्त्व से पैदा हुई
उसने इसे धारण किया ? या ना किया ?
अध्यक्ष इसका जो परम आकाश में,
उसने इसे जाना भी ? या जाना नहीं ?

८५. परम पुरुष-मृत्यु के पार

वेदाहम् एतं पुरुषं महान्तम्
आदित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।
तम् एव विदित्वाति मृत्युम् एति
नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥

य.३१-१८

I know this Purusha Great
Resplendent like the Sun, beyond all darkness,
One transcends death by knowing Him alone,
There is no other path to proceed hereafter.

जानता मैं हूँ उस पुरुष को महान्
तम से परे जो सूर्य सम देदीप्यमान् ।
उसे ही जान, कर जाता मरण को पार है
दूसरी गति ही नहीं मनु के लिए ॥

८६. ब्रह्म ही सब देव

तद् एवाग्निस् तद् आदित्यस्
तद् वायुस् तद् उ चन्द्रमाः ।
तद् एव शुक्रस् तद् ब्रह्म
ता आपः सः प्रजापतिः ॥

य. ३२–१

That, verily, is Agni,
That is the Sun, the Wind, the Moon,
That, indeed, is bright,
That is the Brahman, the Waters, Prajapati.

वही है अग्नि, वह आदित्य,
वायु–चन्द्रमा भी वह ।
वही है शुक्र, वह ही ब्रह्म,
जल भी वह, प्रजापति भी ॥

८७. विश्व का नीड

वेनस् तत् पश्यन् निहितं गुहा सद्
यत्र विश्वं भवत्येकनीडम् ।
तस्मिन्निदं सं च वि चैति सर्वं
स ओतः प्रोतश्च विभुः प्रजासु ॥

य. ३२-८

The loving sage has seen that Being hidden in mystery
Where the universe becomes a single nest,
In Him all this unites, from Him comes forth,
He, all-pervading, is the warp and woof of all created beings.

स्नेह से ऋषि ने वह देखा गूढ स्थान
विश्व बन जाता जहाँ एक घोंसला ।
यह सब वहीं मिलता, वहीं से बिखरता,
औ' वह विभु है प्रजाओं में ओतप्रोत ॥

८८. विश्व से एक रूप–विश्व में व्याप्त

परि द्यावापृथिवी सद्य इत्वा
परि लोकान् परि दिशः परि स्वः ।
ऋतस्य तन्तुं विततं विचृत्य
तद् अपश्यत् तद् अभवत् तद् आसीत् ॥
य. ३२–१२

He swiftly moved around the heaven and earth,
Around the worlds, the directions, the sky,
And weaving out the wide-spread thread of order,
He saw That, He became That, He was That.

अति वेग से वह भ्रमण कर नभ–पृथ्वी पर
समग्र लोक, दिग्दिगन्त और स्वर्ग का ।
प्रसरित ऋत–तन्तुओं को बूनते
उसने इसे देखा, यही वह बन गया, वह था वही ।

८९. परम देव

स पर्यगाच् छुक्रम् अकायम् अव्रणम्
अस्नाविरं शुद्धम् अपापविद्धम् ।
कविर् मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्
याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच् छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥

य. ४०-८

He is the brilliant, formless,
He encompasses all,
Devoid of scar and sinew,
And spotless, pure withal,
The poet, sage, self-existent,
And omnipresent He is,
All things He assigned properly
Since eternal ages.

वह व्याप्त है सर्वत्र, तेजस्वी, रूपहीन,
व्रणहीन, स्नायुरहित, शुद्ध, अपाप है।
कवि है मनीषी वह, स्वयंभू, सर्वव्यापी,
सब पदार्थों के उसीने प्रकृति के
अनुरूप रूप रचे हैं शाश्वत काल से ॥

९०. परम देव के ज्ञान से अमरत्व

अकामो धीरो अमृतः स्वयंभूः
रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः।
तमेव विद्वान् न विभाय मृत्योर्
आत्मानं धीरम् अजरं युवानम्॥
अ० १०-८-४४

Desireless, composed, immortal, self-born,
Saturated with joy, lacking in naught,
The soul serene, ageless, and ever young-
Who knows Him thus, he need fear no death.

निष्काम है वह, धीर, अमर, स्वयंभू है,
संतृप्त रस से, है कहीं से न्यून ना।
उस धीर, नित्य युवान आत्मा अजर को
जानता जो, क्या उसे भय मृत्यु का ?

ॐ

जीवनयोग

THE PATH OF LIFE

९१. वरुण से कुछ छिपा नहीं

यस्‌ तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति
यो निलायं चरति यः प्रतङ्कम्‌ ।
द्वौ संनिषद्य यन्‌ मन्त्रयेते
राजा तद्‌ वेद वरुणस्‌ तृतीयः ॥

अ. ४-१६-२

Whoever stands or walks or goes crooked,
Whoever moves in secret, creeps away,
Whatever two conspire sitting together,
All that, the third, King Varuna, always knows.

जो स्थिर है, जो चलता है, घुम जाता है जो,
भेदी चाल से चलता अदृश्य हो जाता कहीं ।
मिलकर अकेले दो, जो करते हैं विचार
तीसरा राजा वरुण सब जानता है ॥

९२. ऋत का बल

ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीः
ऋतस्य धीतिर् वृजिनानि हन्ति।
ऋतस्य श्लोको बधिराततर्द
कर्णा बुधानः शुचमान आयोः॥

ऋ० ४–२३–८

The vigours of Truth are eternal,
Contemplation of Truth destroys all sin,
The sound of Truth, awakening, brilliant,
Pierces the deaf ears of a man per force.

सत्य का शुभ बल सनातन है
सत्य का चिंतन संहरता पाप को।
सत्य की ध्वनि चित्त में करती प्रकाश
बींध देती है वधिर के कान को॥

९३. देव-परिश्रमी के सखा

इदाह्नः पीतिम् उत वो मदं धुर्-
न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः।
ते नूनम् अस्मे ऋभवो वसूनि
तृतीये अस्मिन् त्सवने दधात॥

ऋ० ४-३३-११

Your draughts and joys for this moment
are ordained,
Gods do not stand in the friendship
of those who toil not,
Therefore, O Ribhus, at this third oblation,
Bestow all riches upon us.

इस क्षण तेरे सुख का प्याला
देवों ने तय कर डाला।
जो श्रमित नहीं, उनको देवों का सख्य नहीं।
इसलिये हमें, हे ऋभुओं !
इस समय तीसरे सवन काल में
वरण प्रदान करो।

९४. विश्वरूपदर्शन

वि मे कर्णा पतयतो वि चक्षुर्
वीदं ज्योतिर् हृदय आहितं यत् ।
वि मे मनश्चरति दूर आधीः
किं स्विद् वक्ष्यामि किमु नू मनिष्ये ॥

ऋ० ६-९-६

My hearing fades away, my sight grows dim,
The light that dwells in my heart
flickers more brilliant,
My mind runs far overleaping all confines,
What shall I speak, what shall my mind envisage ?

अंध हैं आँखें, बधिर हैं कर्ण मेरे,
ज्योति चंचल बन उठी है चित्त की,
उस देव के सम्मुख उपस्थित हूँ जहाँ,
मन चला है दूर बंधन तोड़ कर,
मैं बोलूँ क्या ? क्या सोच भी सकता हूँ मैं ?

९५. सत्यमेव जयते ।

सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय
सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते ।
तयोर् यत् सत्यं यतरत् ऋजीयस्
तदित् सोमोऽवति हन्त्यासत् ॥

ऋ० ७–१०४–१२

For a discreet man it is easy to comprehend:
The Truth and the untruth vie with each other;
Of them, does Soma protect only that
Which is the Truth straight forth,
And destroys the untruth.

जो विवेकी है उसे समझना सहज है
झूठ की स्पर्धा रही नित सत्य से ।
सत्य है सीधा सरल, उसका सदा
सोम रक्षक है, औ' विनाशक झूठ का ॥

९६. देवों के प्रिय परिश्रमी

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं
न स्वप्नाय स्पृहयन्ति।
यन्ति प्रमादम् अतन्द्राः॥
ऋ० ८-२-१८

Gods desire him who labours hard,
They do not want the lazy one, the sleeping.
Alert, they always punish idleness.

चाहते हैं देवता परिश्रमी को
चाहते नहीं आलसी एवं अकर्मी को।
प्रमादियों को दण्ड देने में हैं सदा सावधान॥

९७. सुखमय जीवन

यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति
यथ ऋतव ऋतुभिर्यन्ति साधु।
यथा न पूर्वमपरो जहाति
एवा धातर् आयूंषि कल्पयैषाम्॥

ऋ० १०-१८-५

As days after days may pass in proper succession,
As seasons may follow seasons well in order,
As the successor forsakes not his predecessor,
So form, O Creator, the lives of these.

जीवन ऐसे रच दो इनके, धाता !
कि दिन के पिछे जुड़े दिनों का तांता ।
और चक्र ऋतुओं का चलता रहे बराबर,
छोड़ न दें प्राचीनों को जिससे ये नवतर॥

९८. प्रयत्न करें

अश्मन्वती रीयते सं रभध्वम्
उत्तिष्ठत प्र तरता सखायः।
अत्रा जहाम ये असन्नशेवाः
शिवान् वयम् उत्तरेमाभि वाजान्॥

ऋ० १०–५३–८

The rocky stream flows on, come ye together,
Act bravely, friends ! and cross the river over;
Let us leave those behind who cause unhappiness,
May we reach over to powers which are beneficent !

पथरीली नदियाँ तो बहती सदा रहेंगी,
उठो, सखा, कुछ यत्न करो, कर दो पार इन्हें।
यहीं छोड़ चल देंगें दुःख के सभी बहाने
पहुँच जायँ बलवती उसी सुख की भूमि पर॥

९९. वह मित्र क्या ?

न स सखा यो न ददाति सख्ये
सचाभुवे सचमानाय पित्वः ।
अपास्मात् प्रेयान्न तदोको अस्ति
पृणन्तम् अन्यम् अरणं चिद् इच्छेत् ॥
ऋ० १०-११७-४

He is no friend who does not share his food
With a friend, with an imploring companion.
Move from him away. His is not a home.
Receive rather from a stranger ready to share.

घर आये दीन याचक मित्र संग
बाँट कर जो खाये नहीं, वह मित्र क्या ?
दूर रहो उससे, गृह उसका गृह नहीं
अनजान कोई उदार से प्राप्त करना है सही ॥

१००. मित्र की दृष्टि से

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥
य० ३६–१८

May I look upon all the beings
with a friendly eye !
May we look upon each other
with the eye of a friend !

मित्रदृष्टि से प्राणिमात्र को निरखूँ मैं ।
मित्रदृष्टि से निरखते रहें परस्पर को॥

१०१. शुभप्राप्ति

मनसः कामम् आकूतिं
वाचः सत्यम् अशीय।
पशूनां रूपम् अन्नस्य रसो
यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा॥

य० ३९–४

May I enjoy
The fulfilment of the wish and purpose of mind,
The truth of speech.
May the elegant form of animals,
The flavour of food,
The fame and lustre
Be bestowed upon me! Hail!

मन की कामना–इच्छा औ'
वाणी का सत्य मुझे प्राप्त हो।
प्राणियों के रूप का लचीलापन
अन्न की रस–माधुरी,
यश. लावण्य,
मुझमें निवास करे। स्वहा।

१०२. हे अग्नि ! सन्मार्ग पर ले जाओ !

अग्ने नय सुपथा रायेऽस्मान्
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणम् एनो
भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम ॥

य० ४०–१६

Agni, lead us on the righteous path for wealth,
O lord ! thou art the knower of all the ways,
Remove from us the sin that leads us astray,
To thee we address our prayers again and again.

हे अग्नि, देव, सब मार्ग जाननेवाले,
ले जाओ हमें शुभ मार्ग ऋद्धि के लिये ।
उन्मार्गकारी सब पाप हटा दो हम से
हम बारंबार तुम्हें प्रणाम करते हैं ॥

१०३. मैं हूँ वही

हिरण्मयेन पात्रेण
सत्यस्यापिहितं मुखम् ।
योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम् ।
ओ ३ म् खं ब्रह्म ॥

य० ४०–१७

With a golden lid the face of Truth is covered,
That Purusha in the Sun,
I am but He !
Om ! The Highest Brahman !

ढक रहा सत्य के मुख को स्वर्णिम पात्र !
जो वही पुरुष सूर्य में
वही यह मैं हूँ ।
ओम् ख ब्रह्म ॥

१०४. मेधा की आराधना

मेधाम् अहं प्रथमां ब्रह्मण्वतीं
ब्रह्मजूताम् ऋषिष्टुताम्।
प्रपीतां ब्रह्मचारिभि-
र्देवानाम् अवसे हुवे॥

अ० ६–१०८–२

That foremost, full of prayers,
Which the Brahmins covet and praise,
Which the Brahmacharins drink at deep,
That intellect I invoke first
To seek the favour of gods.

जो ब्राह्मणों की मनचाही, ऋषियों की प्रशस्त,
ब्रह्मचारियों ने जिसका आकंठ किया है पान।
उस सबसे पहली मंत्रवती मेधा का मैं
आराधन कर बन जाऊं देव का कृपानिधान॥

१०५. वाणी का स्वरूप

शिवास्त एका अशिवास्त एकाः
सर्वा विभर्षि सुमनस्यमानः ।
तिस्रो वाचो निहिता अन्तरस्मिन्
तासाम् एका वि पपातामु घोषम् ॥

अ० ७-४३-१

Some words you utter are gracious, some defiled;
Equanimously all of them you bear;
Three stages of speech are hidden within yourself,
Only the fourth comes out, and joins the voice.

कुछ भली होती हैं वाणी, कुछ बुरी,
सब सहे जाते हो तुम सम बुद्धि से ।
तीन इसके रूप तुम्हारे अंदर छिपे,
शब्द से तो एक रूप प्रगट हुआ ॥

१०६. स्थिरता की प्रार्थना

भूमे मातर् नि धेहि मा
भद्रया सुप्रतिष्ठितम् ।
संविदाना दिवा कवे
श्रियां मा धेहि भूत्याम् ॥

अ० १२–१–६३

O Mother Earth! with graciousness
Do set me down, establish well,
In concordance with heavens, Wise one!
Among the resplendent riches and wealth.

हे मात पृथिवी ! स्थिर करो ऐसे मुझे,
सुप्रतिष्ठित मैं बनूँ कल्याण से ।
स्वर्ग से अविरोध संग बना रहे
और संपत्ति की हो मुझमें दमक ॥

१०७. काल का अश्व

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः
सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितः
तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा॥

अ० १६–५३–१

The steed of Time moves on, with seven reins,
And thousand eyes, ageless and prolific,
The wheels of his chariot are all the worlds,
Only the wise and inspired seers ride him.

काल का अश्व अहर्निश चल रहा,
सात रश्मि, हजार आँखें, वीर्यवान।
उसके रथ के चक्र हैं सारे भुवन,
होते हैं आरूढ उस पर ज्ञानवान्॥

१०८. सर्वत्र अभय

अभयं मित्राद् अभयम् अमित्राद्
अभयं ज्ञाताद् अभयं पुरो यः ।
अभयं नक्तं अभयं दिवा नः
सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥

अ० १९-१५-६

May we be without fear
of friend and of foe,
of known and of unknown,
by night and by day.
May all the directions
be friendly to me!

अभय मित्र से, अभय शत्रु से,
अभय ज्ञात से, अभय भावि से ।
अभय रात्रि को, अभय दिवस में,
दसों दिशाएँ मेरी मित्र हों ॥

मन्त्र–प्रथम–चरण–सूची

(९०) अकामो धीरो अमृतः स्वयंभूः (अ० १०–८–४४)
(८१) अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो (ऋ० १०–७१–७)
(१) अग्निम् ईळे पुरोहितम् (ऋ० १–१–१)
(५४) अग्ने केतुर् विशाम् असि (ऋ० १०–१५६–५)
(१०२) अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् (य० ४०–१६)
(७५) अन्ति सन्तं न जहाति (अ० १०–८–३२)
(३८) अपक्रामन् पौरुषेयाद् (अ० ७–१०५–१)
(४७) अपां मध्ये तस्थिवांसम् (ऋ० ७–८९–४)
(१०८) अभयं मित्राद् अभयम् अमित्राद् (अ० १९–१५–६)
(९८) अश्मन्वती रीयते संरभध्वम् (ऋ० १०–५३–८)
(८३) अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम् (ऋ० १०–१२५–३)
(६९) अहमेव स्वयम् इदं वदामि (ऋ० १०–१२५–५)
(४४) आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः (ऋ० १–८९–१)
(३०) आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् (य० २२–२२)
(२७) आयुर् यज्ञेन कल्पताम् (य० ९–२१)
(९६) इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तम् (ऋ० ८–२–१८)
(९३) इदाह्नः पीतिम् उत वो मदं धुः (ऋ० ४–३३–११)
(७८) इन्द्रं मित्रं वरुणम् अग्निम् आहुः (ऋ० १–६४–४६)
(६६) इन्द्र क्रतुं न आ भर (ऋ० ७–३२–२६)
(१८) इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि (ऋ० २–२१–६)
(८४) इयं विसृष्टिर् यत आ बभूव (ऋ० १०–१२९–७)
(३५) ईशा वास्यम् इदं सर्वम् (य० ४०–१, २)
(८०) उत त्वः पश्यन् न ददर्श वाचम् (ऋ० १०–७१–४)
(२५) उत वात पितासि नः (ऋ० १०–१८६–२)
(४) उद् वयं तमसस्परि (ऋ० १–५०–१०)
(३३) ऋचं वाचं प्र पद्ये (य० ३६–१–२)
(६३) ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् (ऋ० १–१६४–३९)
(९२) ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीः (ऋ० ४–२३–८)
(७९) एक एवाग्निर् बहुधा समिद्ध (ऋ० ८–५८–२)
(१०७) कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः (अ० १९–५३–१)
(६४) गणानां त्वा गणपतिं हवामहे (ऋ० २–२३–१)

(५५) गायन्ति त्वा गायत्रिणो (सा. १·१०-१/१३४४)
(७६) चत्वारि वाक् परिमिता पदानि (ऋ० १-१६४-४५)
(७७) चित्रं देवानाम् उदगाद् अनीकम् (ऋ० १-११५-१)
(६५) तत् सवितुर् वरेण्यम् (ऋ० ३-६२-१०)
(८६) तद् एव अग्निस् तद् आदित्यस् (य० ३२-१)
(४३) तद् विष्णोः परमं पदम् (ऋ० १-२२-२०)
(१३) तम् ईशानं जगतस् तस्थुषस् पतिम् (ऋ० १-८९-५)
(२८) तेजोऽसि तेजो मयि धेहि (य० १९-९)
(२१) त्रातारो देवा अधि वोचता नो (ऋ० ८-४८-१४)
(२०) त्र्यंबकं यजामहे (ऋ० ७-५९-१२)
(४९) त्वं ह्य न: पिता वसो (ऋ० ८-९८-११)
(७) त्वम् अग्न इन्द्रो वृषभः सतामसि (ऋ० २-१-३)
(४८) त्वयेद् इन्द्र युजा वयम् (ऋ० ८-९२-३२)
(१२) देवानां भद्रा सुमतिर् ऋजूयताम् (ऋ० १-८९-२)
(३४) द्यौः शान्तिर् अन्तरिक्षं शान्तिः (य० ३६-१७)
(६) द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया (ऋ० १-१६४-२०)
(१०) न यं जरन्ति शरदो न मासा (ऋ० ६-२४-७)
(१९) न स सखा यो न ददाति सख्ये (ऋ० १०-११७-४)
(४२) परि त्वा गिर्वणो गिरः (ऋ० १-१०-१२)
(८८) परि द्यावा पृथिवी सद्य इत्वा (य० ३२-१२)
(२) पावका: न: सरस्वती (ऋ० १-३-१०)
(५०) पुनन्तु मा देवजनाः (ऋ० ९-६७-२७)
(५६) पुनस् त्वाऽऽदित्याः रुद्राः वसवः (य० १२-४४)
(५९) प्रियं मा कृणु देवेषु (अ० १९-६२-१)
(७४) ब्रह्मचर्येण तपसा (अ० ११-५-१७)
(३६) भगस्य नावम् आ रोह (अ० २-३६-५)
(१५) भद्रं कर्णेभिः श्रुणुयाम देवाः (ऋ० १-८९-८)
(१०६) भूमे मातर् नि धेहि माम् (अ० १२-१-६३)
(१७) मधु वाता ऋतायते (ऋ० १-९०-६, ९)
(१०१) मनसः कामम् आकूतिम् (य० ३९-४)
(५८) महीमु षु मातरं सुव्रतानाम् (य० २१-५)
(३) महो अर्णः सरस्वती (ऋ० १-३ १२)
(१००) मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि (य० ३६-१८)
(१०४) मेधाम् अहं प्रथमं ब्रह्मण्वतीम् (अ० ६-१०८-२)

(२४) मोघम् अन्नं विन्दते अप्रचेताः	(ऋ० १०-११७-६)
(६८) य आत्मदा बलदा यस्य विश्व	(ऋ० १०-१२१-२)
(३१) यज् जाग्रतो दूरम् उदैति दैवम्	(य० ३४-१)
(३२) यत् प्रज्ञानम् उत चेतो धृतिश्च	(य० ३४-३)
(२९) यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च	(य० २०-२५)
(२२) यत्रानुकामं चरणम्	(ऋ. ९-११३-९/११)
(९७) यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति	(ऋ० १०-१८-५)
(३७) यद् वो मनः परागतम्	(अ० ७-१२-४)
(६७) यस् तित्याज सचिविदं सखायम्	(ऋ० १०-७१-६)
(९१) यस् तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति	(अ० ४-१६-२)
(४५) यस् ते स्तनः शशयो यो मयोभूः	(ऋ० १-१६४-४९)
(६१) यस्मात् कोशाद् उदभराम वेदम्	(अ० १९-७२-१)
(५) यस्य त्री पूर्णा मधुना पदानि	(ऋ० १-१५४-४)
(७१) यां मेधां देवगणाः	(य० ३२-१४-१५)
(५१) युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिः	(ऋ० १०-१३-१)
(७२) येन देवा न वियन्ति	(अ० ३-३०-४)
(४६) यो जागार तम् ऋचः कामयन्ते	(ऋ० ५-४४-१४)
(५२) यो नः पिता जनिता यो विधाता	(ऋ० १०-८२-३)
(२३) यो वः शिवतमो रसः	(ऋ० १०-९-२)
(५७) रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु	(य० १८-४८)
(११) रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव	(ऋ० ६-४७-१८)
(३९) वाङ् म आसन् नसोः प्राणः	(अ० ११-६०-१)
(९४) वि मे कर्णा पतयतो वि चक्षुः	(ऋ० ६-९-६)
(९) विश्वानि देव सवितर्	(ऋ० ५-८२-५, ६)
(८५) वेदाहम् एतं पुरुषं महान्तम्	(य० ३१-१८)
(८७) वेनस् तत् पश्यन् निहितं गुहा सद्	(य० ३२-८)
(७०) व्रतेन दीक्षाम् आप्नोति	(य० १९-३०)
(१६) शतम् इन्नु शरदो अन्ति देवा	(ऋ० १-८९-९)
(१०५) शिवास्त एका अशिवास्त एका	(अ० ७-४३-१)
(२६) सं गच्छध्वं सं वदध्वम्	(ऋ. १०.१९१.२, ४)
(४०) सत्यं बृहद् ऋतम् उग्रं दीक्षा तपो	(अ० १२-१-१)
(४१) स नः पितेव सूनवे	(ऋ० १-१-९)
(८९) स पर्यगाच् छुक्रम् अकायम् अव्रणम्	(य० ४०-८)

(७३) सर्वो वै तत्र जीवति (अ० ८-२-२५)
(८२) सहस्रशीर्षा: पुरुष: (ऋ० १०-९०-१)
(६२) सुदक्षो दक्षैः क्रतुनासि सुक्रतुः (ऋ० १०-९१-३)
(९५) सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय (ऋ० ७-११४-१२)
(६०) स्तुता मया वरदा वेदमाता (अ० १९-७१-१)
(१४) स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः (ऋ० १-८९-६)
(१९) स्वस्ति पन्थाम् अनुचरेम (ऋ० ५-५१-१५)
(८) हंसः शुचिषद् वसुर् अन्तरिक्षसद् (ऋ० ४-४०-५)
(१०३) हिरण्मयेन पात्रेण (य० ४०-१७)
(५३) हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे (ऋ० १०-१२१-१)

卐

गुरु-गिरा-माधुरी

वेद-सुधा रसवाहिनी
रसना रसबस बरबस करती
जन-मन-उर उल्लासिनी......वेदसुधा......१

शब्दब्रह्म मधु संगीत-सरिता
कलरव करती गाती गीता
कर्म भक्ति अरु ज्ञान त्रिवेणी
जीवनमुक्ति प्रदायिनी......वेदसुधा......२

आनन्दघन गुरु मुखरित अमृत
वर्षा प्लावित प्रेमी कृत कृत
ब्रह्म जगत ईश्वर एक तत्त्व
सत्य स्वरूप समवादिनी......वेदसुधा......३

ऋषि मुनि ध्यानी जिन रूप ध्यावे
वेदपुरुष महिमा नहीं पावे
गुरुगंगेश्वर वेदरत्नाकर
रत्न-प्रभा रूपदर्शिनी......वेदसुधा......४

—रतन फोगला

卐

Bharatiya Vidya Bhawan ... Mahavidyalaya
488

ऋग वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद